रंग-प्रसंग. जुलाई-सितंबर-2006

-नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा, बहावलपुर हाउस, भगवानदास रोड, नई दिल्ली-01

<u>नाटक</u>

बटोही

हृषीकेश सुलभ

*सुपरिचित रंग निर्देशक देवेन्द्र राज अंकुर के निर्देशन में **बटोही** का प्रथम मंचन राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय नई दिल्ली, रंगमंडल के कलाकारों द्वारा ग्रीष्मकालीन समारोह के दौरान 11-12 जून, 2006 को अभिमंच प्रेक्षागृह में हुआ।*

प्रथम मंचन में भाग लेने वाले कलाकार—

मंच पर

रामानंद	टीकम जोशी	जगधारी/रामदेव बिंद	समीप सिंह
भिखारी	सुमन वैद्य	बंगाली/लड़का	अमित कुमार पाठक
दलसिंगर/भाई	संजय मापारे	भगवान शाह/सुमारू/पारस	गोविन्द पाण्डे
शिवकली	दक्षा शर्मा	कमला बबुनी	प्रीति झा
बहोर	निर्मल कान्त चौधरी	मोती बहू/स्त्री	दक्षिणा शर्मा
मनतुरनी	निधि मिश्रा	आदमी/बुचिया के पिता	मोती लाल खरे
मिसिरजी/मुखलाल	सुभाष चन्द्रा	छबिला	ओम प्रकाश
बाबूलाल	बिनोद शर्मा		
जगदेव	सौति चक्रबर्ती		

बटोही में रानावि रंगमंडल के कलाकार

मंच परे

संगीत	संजय उपाध्याय
पार्श्व गायन	संजय उपाध्याय, अंजना पुरी, अनिल मिश्रा, दक्षिणा शर्मा, प्रीति झा, गोविन्द पाण्डे
कोरस	सुभाष, अमित, गोविन्द पाण्डे, दक्षा, दक्षिणा, प्रीति
ध्वनि अंकन	एस. मनोहरन
संगीत संयोजन	अनिल मिश्रा
सिंथेसाइज़र	सैण्डी
सारंगी	अनिल मिश्रा
बांसुरी	पंकज
शहनाई	संजीव
बैन्जो	नासिर
ताल संयोजन	गगन
तबला	ओम प्रकाश
ढोलक / ऑक्टोपैड	गगन
ताल वाद्य	मुस्तफ़ा हुसैन
हारमोनियम	संजय
संगीत संचालन	राजेन्द्र गोसाँई
प्रस्तुति समन्वयक	पराग सर्माह
प्रकाश एवं मंच परिकल्पना	सुरेश भारद्वाज
सहायक	सुलेमा
वस्त्र-विन्यास	वन्दना शर्मा
सहायक	प्रीति झा
प्रभारी	चरणजीत सिंह भाटिय
सहायक	बुद्धराम
मंच सामग्री	मोतीलाल खरे
सहायक	संजय मापारे
मंच-निर्माण	रामचन्द्र, धर्मवीर सिंह
रूप-सज्जा	सदानंद पाटिल
सहायक	प्रीति झा
छायाचित्र	दीपक
स्मारिका	नसरीन इसहाक
प्रदर्शनी	पृथ्वी सिंह नेगी
पोस्टर परिकल्पक	सुरेश शर्मा
सहायक निर्देशक	सदानंद पाटिल
निर्देशन	**देवेन्द्र राज अंकुर**

(मंच पर गहन अँधेरा। नेपथ्य से गायन-स्वर उभरता है, जो क्रमशः तीव्र होता है।)

नेपथ्य स्वर : भादो रैन, गहन अँधियारा;
बौराई नदिया की धार।
उमड़े जलधार।
मेघा कारे, गम्भीरे गरजें,
बिजुरी गिरे जलधार।
उमड़े जलधार।
बंधन तोड़ के नाचे नदिया,
जिनगी फँसी मँझधार।
उमड़े जलधार।
नदिया ने छीना, नदिया ने लूटा,
मोरा प्रान आधार।
उमड़े जलधार।

(गंगा तट। भिखारी शिशु का शव प्रवाहित करने के बाद खड़े हैं। रामानंद सिंह साथ हैं। भिखारी दोनों हथेलियों से जल को हिलकोरते हैं और अँजुरी से जल अर्पित करते हैं।)

भिखारी : हे माई! हे गंगे! समेटो माई, अपनी धार समेटो। अब कुछ ना बचा। सब तो ले लिया तुमने धीरे-धीरे। धरती गई तुम्हारे पेट में। खेती-बाड़ी, . . .घर-दुआर, . . . माल-मवेशी— सब ले लिया तुमने। अपना कोप समेटो माई! . . . माई, तुमने किसी को नहीं छोड़ा। अपने इस भिखारी को भीख दिया था, वो भी ले गईं माई तुम अपनी धार में बहाकर। . . .पहली औरत का मुँह भी नहीं देख पाए थे। क्या देखते! वो उमर थी भला देखने की। उसकी साड़ी का रंग भर याद है। . . . लाल, एकरंगे में बँधी हुई पोथी जैसे रेहल पर रखी हो, वैसे ही बैठी थी कोहबर में। बस इतना ही याद है। आज भी आती है सपने में। आकर खड़ी हो जाती है सिरहाने। . . . आमडाढ़ीवाली आई और आते ही तुमने उनके आँचर में बबुआ को डाल दिया। गोद भर दी उसकी। . . . पर क्या बिगाड़ा था उसने कि गोद भर दिया और पीछे से बुलावा भेज दिया? कल ही तो सौंप गए थे उसकी देह तुम्हें। . . . और आज दूसरा दिन बीता भी नहीं कि बबुआ को बुला लिया। इसको तो छोड़ देतीं . . . हम पालते-पोसते औरत बनकर। इतनी दया भी नहीं की तुमने अपने भिखारी पर। भीख में दिया हुआ भी वापस ले लिया। *(फूट-फूटकर रोते हैं।)*

रामानंद : *(भिखारी को संभालते हुए।)* भिखारी! . . .भिखारी। धीरज धरो भिखारी। कलेजा मज़बूत नहीं करोगे, तो कैसे चलेगी जिनगी?

भिखारी : कहाँ से लाएँ लोहे का कलेजा बाबू साहेब? कैसे धरें धीरज? . . . अब बचा क्या कि धीरज धरें?

रामानंद : जो चला गया, सो अपना नहीं था भिखारी। जो बचा है, सो ही अपना है। गाँव-जवार, संगी-साथी, हित-परिजन, जो सामने है . . . वही अपना है। अपने बूढ़े बाप के बारे में सोचो। दलसिंगार ठाकुर ने खटिया पकड़ लिया है। उस बूढ़े के कलेजे पर कितना भारी वज्र गिरा है, ज़रा सोचो तो। जिसके जाने का वय, वो अपनी आँख से अपने बाल-बच्चों

भिखारी : बाबू साहेब!

रामानंद : भिखारी! अब अपने को सहेजो।

भिखारी : बाबू साहेब! बहुत कठिन बखत पर आप हमारी पीठ पर खड़ा रहे हैं।

रामानंद : तुम्हारे संगतिया हैं हम।

भिखारी : बड़का भइया भी तो हैं। राम हैं आप . . . रामजी हैं।

रामानंद : दुख अकेले का नहीं होता। मिल-जुल कर ही कटता है दुख। अकेले का दुख तो पहाड़ की तरह होता है।

भिखारी : बाबू साहेब, एक अरज है। *(दोनों हाथ जोड़ देते हैं।)*

रामानंद : ऐसे मत करो भाई! बोलो। बोलो तो सही।

भिखारी : हम गाँव छोड़ देंगे अब। . . . छोड़ देंगे कुतुबपुर।

रामानंद : कहाँ जाओगे? दुनिया इतनी आसान ना है भिखारी।

भिखारी : कहीं भी, पर कुतुबपुर में ना रहेंगे। . . . बहुत सह लिए अब। अब सहन नहीं होता।

रामानंद : बड़का भइया मानते हो . . . रामजी कहते हो और अकेले वनवास जाना चाहते हो।

भिखारी : ऐसी औक़ात नहीं हमारी कि रामजी को साथ लेकर जाएँ। . . . फिर कौन देखेगा अयोध्या को? ना बाबू साहेब, ना।

रामानंद : एक तो पहले से ही हमारे कलेजा पर बोझ है कि सब मेरे कारन हुआ। लोग कहते हैं कि भोले बाबा का मंदिर बनवाने में. . .

भिखारी : ना बाबू साहेब, ऐसी बानी मत बोलिए।

रामानंद : कहाँ जाओगे भिखारी? अपना गाँव, अपनी धरती छोड़कर चैन से कोई नहीं जी सकता भाई। पेड़-पौधा तक के लिए आसान नहीं होता एक बार उखड़कर फिर से जड़ जमाना।

भिखारी : बाबू साहेब! धरती तो कहने भर को अपनी है। कहाँ है धरती? होती, तो भूखे पेट, नंगे पाँव, जेठ-बैशाख की दुपहरिया हो, चाहे सावन-भादो की अधरतिया, भटकना नहीं पड़ता।

रामानंद : और लोग-बाग . . . संगी-साथी, हित-परिजन?

भिखारी : सो तो है . . . पर बाबू साहेब, मन बड़ा आकुल रहता है। सब तो लूट लिया भगवान ने। एक हाथ से दिया और दूसरे हाथ से छीन लिया। . . .अब मन उचट गया है। दूसरी बात ये है कि अब रे-तो सुनते, . . . सेवा-टहल करते . . . बेगार खटते नहीं जीना चाहते हम। आप भरोसा रखिए। आप झूठ भी पुकारेंगे, तो हम साँच हाज़िर हो जाएँगे। हमारे पाँव में प्रेत है बाबू साहेब। भटकना हमारे करम का खेल है।

रामानंद : ठीक है। नहीं मानते, तो जाओ . . . पर मन उदास हो तो चले आना भिखारी। झूठा मान करके दुख मत सहना।

भिखारी : अब दुख और कैसा होता है बाबू साहेब? और मान? नाई के घर जनमे पूत का मान क्या और अपमान क्या? आप चिंता मत कीजिए . . . बस . . .

रामानंद : आमडाढ़ी वाली का श्राद्ध बीतने के . . .

भिखारी : हाँ, बीत जाए सब, फिर निकलेंगे।

(भिखारी दोनों हाथ जोड़कर रामानंद सिंह को विदा करते हैं। प्रकाश सिमटता है और पुनः दीप्त होता है। दाढ़ी बनाने का सामान—छूरा, कैंची. कटोरी आदि [illegible]

हैं। एक पोटली में बाँधकर लाठी में टाँगते हैं और कंधे पर लेकर घर से निकल रहे हैं। नेपथ्य से गायन स्वर आरम्भ होता है और चलता रहता है। शिवकली और दलसिंगार खड़े हैं। भिखारी उनके पास आते हैं और शिवकली के पाँव छूते हैं। दलसिंगार की तरफ़ बढ़ते हैं, पर वे मुड़कर बाहर निकल जाते हैं। बहोर के पास आते हैं। बहोर कुछ दूर तक उनका साथ देते हैं। भिखारी बाहर निकल जाते हैं।)

नेपथ्य स्वर : मन तकली जस नाचे
दुख का धागा काते।
अकुलाए मनवा पागल
अजब समय की घातें।
छोड़ कुतुबपुर चले भिखारी
काँपें रिश्ते-नाते।

(भिखारी के जाते ही शिवकली देवी रोने लगती हैं। बहोर उनके पास आते हैं। दल सिंगार भी लौट जाते हैं।)

दलसिंगार : बंद करो रोना-धोना। जो आदमी सारी जिनगी अपनी मनमर्जी करता रहा, वो तुम्हारे विलाप करने से नहीं लौटने वाला।

शिवकली : पतोहू गई . . . पोता नहीं रहा . . . बेटा घर छोड़ दिया। हमसे बड़ा अभागा कौन होगा कि ना रोए। रोने से भी गए हम?

दलसिंगार : बेटे को भी जिनगी से गया मानकर विलाप कर लो। जितना जी चाहे, आज रो लो। पर एक बात याद रखना कि आज के बाद अपने दुलरूवा बेटे के लिए कभी मत रोना। हमारे सामने तो एकदम नहीं।

बहोर : बाबू!

दलसिंगार : *(बहोर को अनुसना करते हुए)* सिरफ उसकी जनाना मरी थी . . . कि हमारी भी कुछ लगती थी? बेटा था उसका, तो हमारा पोता भी तो था। कितना बड़ा दुख है उसका कि कुतुबपुर में अँट नहीं पा रहा है? अच्छा हुआ, चला गया।

बहोर : बाबू, तुम बेकार गरज रहे हो। जिसकी औरत चली जाए और गोद का दुधमुँहा उठ जाए, उसकी मति थिर रहेगी भला?

दलसिंगार : तुम समझोगे उसकी मति? ना। तुम नहीं समझ सकते। हम खूब समझते हैं उसको। उसकी सारी लीला का भेद मालूम है हमको।

(रामानंद सिंह प्रवेश करते हैं)

रामानंद : क्या हुआ जी दलसिंगार ठाकुर?

दलसिंगार : *(दोनों हाथ जोड़ते हुए)*। परनाम बाबू साहेब!

रामानंद : गमी के घर में झगड़ा-झंझट अच्छा नहीं लगता है। क्या जी बहोर, बुढ़ऊ का ध्यान रखो।

दलसिंगार : कसूर माफ हो बाबू साहेब! एक बात पूछें?

रामानंद : पूछो। कसूर माफ की कौन बात।

दलसिंगार : रामजी को छोड़कर लछुमन अकेले चले गए वनवास? आपका चरन छुए बिना अजोध्याजी से बाहर निकल गए?

पड़ने पर कभी-कभी नज़र फेर ले। सब जानते-बूझते हुए भी अनजान बन जाए। भिखारी गोद के बालक ना है कि हम, चाहे तुम, उनके पीछे-पीछे भागें।

दलसिंगार : हम भी तो यही कह रहे हैं बाबू साहेब कि जिसके कलेजे में बूढ़े बाप-महतारी के लिए मोह-ममता ना है, उसके लिए छाती पीट-पीटकर रोने से कौन लाभ?

रामानंद : बे-मतलब अपना जी हलकान कर रहे हो। भिखारी ना तो कहीं डूब-धँसकर मरने गए हैं और ना ही अंग्रेज़ बहादुर के पलटन में भरती होने।

बहोर : आपसे भेंट हुई?

रामानंद : हूँ। आए थे हमारे पास। हमसे मिलकर गए। मन उचाट हो गया था इस जगह से। आखिर कितना सहे कोई।

दलसिंगार : हम सह रहे हैं कि ना? उमिर है हमारी इतना सहने की, बोलिए? हम भी गाँव-घर-परिवार छोड़कर चल दें, तब?

रामानंद : ए ठाकुर, अरे हम तो नहीं गए। हम तो हैं तुम्हारे पास। समझो राम को अजोध्या में रखकर लछुमन गए वनवास। भरोसा रखो हमारे ऊपर। जजिमानी देखने के लिए बहोर हैं। कौन दस-बीस बीघे की खेती है कि परती रह जाएगा सब!

दलसिंगार : ठीक है। अब जो भोलेबाबा की मरजी। हमको तो सब सहना है। जब तक देह है . . . सब सहना है। *(दोनों हाथ जोड़ते हैं)*

रामानंद : चलो जी बहोर। इधर आओ। तुमसे कुछ बतकही है।

(बहोर को साथ लेकर रामानंद प्रस्थान करते हैं। दलसिंगार धीमे क़दमों से चलते हुए शिवकली के पास आते हैं।)

दलसिंगार : उठो अब। जाओ। पंछी था। उड़ गया। सिरफ उड़ते पंछी को पता होता है कि उसे जाना कहा है। . . . हम समझते हैं तुम्हारे मन का हाल।

(प्रकाश मद्धिम होकर दोनों पर केन्द्रित होता है। शिवकली फिर रोने लगती हैं। दलसिंगार उनके सिर पर हाथ रखते हैं। प्रकाश सिमटता है। मंच के दूसरे भाग में प्रकाश।)

(फतनपुर। भिखारी के घर के सामने का दृश्य। पारस चौधरी और रामदेव बिन्द प्रवेश करते हैं।)

पारस चौधरी : भिखारी भाई। . . . ए भिखारी भाई!

रामदेव बिन्द : अरे निकलो जी। किरिन डूबते कोहबर पकड़ लिए क्या जी?

भिखारी : *(निकलते हुए)* आ रहे हैं भाई . . . आ रहे हैं। अरे! परमा भाई! . . . का हालचाल है भाई?

रामदेव बिन्द : हमहुँ हैं।

भिखारी : परमा भाई बोले कि चलो भिखारी के दुआर परा अब यहाँ आए तो देख रहे हैं कि तुम कोहबर में घुसे हो।

भिखारी : हमारे कोहबर में घुसने से तुमको डाह हो रही है?

पारस चौधरी : ना भाई। डाह कौन बात की? हम तो बोले कि अपने गाँव के लिए मान-मरजाद की बात है कि दूसरे गाँव से आकर भिखारी रच-बस गए।

भिखारी : सब लोगों का सहजोग है। बिना सहजोग के थोड़े होता! . . . तुम लँगड़ा रहे हो बात का है?

पारस चौधरी : अब का बतावें! इसी कारन तो आए थे।

भिखारी : का हुआ भाई?

रामदेव बिन्द : अरे बताओ। अब कनिया-बहुरिया माफिक लजाओ मत। पाप का फल संगी-साथी से ना छुपता है।

पारस चौधरी : अरे रामदेव! तुम बहुत-बहुत लबर-लबर करते रहता हैं। तब से पीछे पड़ा हुआ है।

भिखारी : चुप रहो जी रामदेव भाई।

रामदेव बिन्द : चुप का रहें! हम को सब मालूम है। हम हैं मल्लाह। पाँक में हाथ घुसाकर मछरी पकड़ लेते हैं। अब आज चौधरी पकड़ा गए हैं, तो छटपटा रहे हैं।

पारस चौधरी : हम कौन पाप किए हैं कि पकड़ा गए हैं जी? बोलो?

रामदेव बिन्द : ए भिखारी भाई, तुम ही बोलो, बलतोड़ घाव बिना पाप किए होता है जी?

भिखारी : घत्त मरदे! हम समझे कौनो बात है। तुम तो खाली बात बनाते रहते हो . . . बात जैसी बात ना और रात भर लीला। *(पारस से)* कहँवा है जी?

पारस चौधरी : जाँघ में है भाई।

रामदेव बिन्द : हम बोले कि चलो भिखारी के पास। नहरनी लगवा लो, सब मवाद बह जाएगा।

भिखारी : जान लोगे का जी? हम कौनो वैद-हकीम हैं का? चौधरी भाई, भोरे-भिनसारे उठकर चलो जाओ। बैद जी के पास। दवाई ले लो। रामदेव के फेरा में मत पड़ो।

रामदेव बिन्द : तुम हमारे फेरा में पड़े, तो आज कौनो दुख-तकलीफ है का?

भिखारी : ना। सो तो है। कौनो दुख ना है। तुम ना होते रामदेव, तो हम फतनपुर ना आते। तुम जब मिलते थे, कहते चलो फतनपुर . . . वही रहो। . . . का रखा है कुतुबपुर में? आए, तो झोंपड़ी डालने के लिए तुमने जमीन दिया . . . बाँस . . .खर सदका इंतजमा किया . . .।

रामदेव बिन्द : गलत तो ना बोलते थे, जानते हो पासर भाई, कुतुबपुर बड़का जात का गाँव है। पर आमदनी ना है। मान-मरजाद ना है। बेरा-कुबेरा लोग छाती पर सवार रहेंगे। खटते रहो बेगार। ऊपर से सहो बोली-ठोली।

पारस चौधरी : चलो अच्छा हुआ, आ गए। बस गए। धीरे-धीरे बढ़ती ही होगी। घटेगा तो नहीं . . .बाप रे . . .।

रामदेव बिन्द : का हुआ जी?

पारस चौधरी : टीस रहा है।

रामदेव बिन्द : सहो। कौन अहीर हो जी? सुने हैं कि भर-भर बाल्टी दूध पीते हो। घाव का दरद नहीं सह सकते?

भिखारी : दरद सहना आसान काम ना है रामदेव। कठिन काम है मेरे भाई। जो सहता है वही बूझ सकता है दरद की तासीर।

पारस चौधरी : जाने चिलम जा पर चढ़े तासीर।

रामदेव बिन्द : *(भिखारी से)* अब तुम को कौन दरद लों गया जी कि उदास होकर बतियाने लगे।

भिखारी : ना। कौनो दरद ना है।

रामदेव बिन्द : झूठ बोल रहे हो तुम। बात का है?

रामदेव बिन्द : बोलो। बोलो तो सही।

भिखारी : रामदेव भाई! अब हम गाँव लवटेंगे। . . . कुतुबपुर

रामदेव बिन्द : काहे जी? कौन अपराध हो गया फतनपुर से कुतुबपुर लौटोगे?

भिखारी : कौनो अपराध ना हुआ है . . . बस। ऐसे ही। . . . अब हम लौट जाएँगे। कुतुबपुर बुला रहा है . . . हमारे लिए सबकुछ है फतनपुर में, पर कुतुबपुर ना है। . . . नाराम मत होना रामदेव। हम तुम्हारे और फतनपुर के नेह-छोह के बोझ से दबे हैं। सब भूल सकते हैं, पर फतनपुर को ना भूल सकते। समझना हमारे मन के भीतर का दरद। जिस फतनपुर ने सहारा दिया, उसको छोड़ने का दरद तो होगा। समझना रामदेव।

रामदेव बिन्द : बहुत निरमोही हो।

पारस चौधरी : कब जाओगे?

भिखारी : दिन तय ना किए हैं . . . पर जल्दी ही जाएँगे।

पारस चौधरी : चलो जी रामदेव। कहाँ तो आए थे कि भिखारी हमारे घाव का दरद हरेंगे . . . और कहाँ उल्टे बिछुड़ने का दरद दे दिए भिखारी चलो . . .।

भिखारी : नाराज हो गए।

पारस : ना भाई। चलें, अब रात हो चुकी है। पर चुप-चोरी मत निकल जाना। जाने का दिन तय करना, तो पहिले बना देना।

(रामदेव बिन्द को मानो काठ मार गया हो। दोनों निकलते हैं। प्रकाश सिमटता है। मंच का दूसरा भाग दीप्त होता है। कुतुबपुर में। भिखारी के दरवाजे का दृश्य। खाट पर दलसिंगार ठाकुर बैठे हैं। बहोर सिर पर पेटी लिए प्रवेश करते हैं।)

बहोर : एक बाबू! बाबू! माई रे!

दलसिंगार : क्या है जी?

बहोर : अरे देखो कौन आया।

दलसिंगार : कौन है जी?

बहोर : बड़का भइया आए जी। . . . भिखारी भइया।

(भिखारी और मनतुरनी का बच्चों के साथ (गोद में बच्चा और साथ में एक बेटी) प्रवेश। शिवकली देवी बाहर निकलती है।)

बहोर : माई! . . . माई! देख भइया।

(भिखारी शिवकली के पाँव छूते हैं। शिवकली बच्चे को खाट पर बैठे दलसिंगार की गोद मे डाल देती हैं। भिखारी की पत्नी भीतर चली जाती हैं।)

शिवकली : चौबीसों घंटे अपने करम को कोसते थे। हमारे बेटा से मुँह फुलाए रहते थे। रार ताने फिरते थे। अब खेलाइए पोता-पोती। घर भर गया। अकेले गए थे बबुआ और लौटे हैं भरे-पूरे . . . पतोहू-पोता-पोती सब लेकर।

दलसिंगार : हमहीं रात-दिन छाती कूटते थे? भर-भर आँख लोर लेकर घर-बाहर पगली जैसा हम नहीं बौराए फिरते थे। . . .बेटा के बिछोह में पुका फाड़ के कौन रोते फिरता था?

शिवकली : माई का जियरा गाय जैसा, बाप का जियरा कसाई जैसा।

दलसिंगार : बात मत बदलो। बाप नही, बेटा का जियरा कसाई जैसा।

शिवकली : देखिए तो बचवा कैसे मुलुर-मुलुर ताक रहा है।

बहोर : बिहँसियो रहा है।

(शिवकली बच्चे को लेकर भीतर चली जाती है। पीतल की थाली, लोटा में पानी लिए आती हैं। बहोर दूसरी खाट बिछाते हैं। भिखारी बैठते हैं। शिवकली उनके पाँव पखारती हैं।)

बहोर : गोड़ धोवते रह जाओगी माई। पंछी फिर उड़ जाएगा फतनपुर।

शिवकली : कहिया तक उड़ते रहेगा पंछी। कहियो तो लौट के आएगा अपने खोंते में। अब तो बेड़ी-हथकड़ी भी लग गई है।

बहोर : जबर पंछी है। गौरैया ना है। बेड़ी-हथकड़ी सहित उड़ जाएगा।

भिखारी : बहुत नाराज़ हो बहोर?

बहोर : ना भइया, . . . ना। नाराजगी की कौनो बात ना है। बस तुम्हारे बिना गाँव-घर सब सूना लगता है। तुम गए अपने मन से, पर गाँव-जवार तो समझता है, कौनो मनमुटाव हुआ होगा। . . . अब छोड़ो फतनपुर भइया।

भिखारी : छोड़ दिए बहोर। लौट आए फतनपुर से।

बहोर : साँच?

भिखारी : हूँ। साँच! तुम्हारी भौजी का मन वहाँ से उचाट हो गया।

बहोर : और तुम्हारा मन?

भिखारी : हमारे मन की चिंता छोड़ो। मत पूछो। मन नहीं रहता, तो घर-गिरहस्थी माथा पर लादकर लौटते भला?

दलसिंगार : क्या जी बहोर, खाली बतकुच्चन होगा? भूखासल-पियासल होगा सब . . . पहिले कुछ जलखई का इंतजाम करो बाबू।

(दलसिंगार उठकर चल देते हैं। भिखारी से कोई संवाद नहीं करते। शिवकली भी भीतर चली जाती हैं। बहोर खड़े हैं। रामानंद सिंह प्रवेश करते हैं।)

रामानंद : आ गए? कब आए?

(रामानंद सिंह को देखकर दोनों हाथ जोड़े भिखारी उनकी ओर दौड़ते हैं। रामानंद उन्हें बाँहों में भर लेते हैं।)

भिखारी : बस पहुँचे ही हैं।

रामानंद : आँख तरस गई थी तुम्हारे लिए।

भिखारी : बाबू साहेब! मेरा तो परान तरस रहा है। आपके बिना तो मेरी जिनगी कछार की रेत है।

रामानंद : इसी रेत में तरबूज की फसल होती है भिखारी। लाल . . . मीठ . . . रस भरा गूदा वाला तरबूज। जेठ-बैशाख में आत्मा तर हो जाती है। खाकर लगता है, जुगन-जुगन की तृषा बुझानी। कब तक हो?

बहोर : भौजी और बाल-बच्चा सबको साथ लाए हैं।

रामानंद : अच्छा किए हो . . . गए अकेले और लौटे भरे-पूरे।

बहोर : अब भइया कुतुबपुर में ही रहेंगे।

रामानंद : हमारे मन का काम किए हो भिखारी। अपनी धरती छोड़कर जीना भी कवनो जीना है। अपनी धरती का भी तो रिन होता है। सबका गुजर-बसर तो हो ही रहा है। जैसे सबका, वैसे हमारा-तुम्हारा। एक बेटे की कमी थी, सो भगवान पूरा कर दिए।

भिखारी : पर बाबू साहेब, बिना देस-परदेस घूमे आँख ना खुलती है। कुआँ के बेंग माफिक रह जाता है आदमी। फिर इतना बड़ा परिवार। ना कौनो खेती-बाड़ी, ना कवना रोजगार!

दाढ़ी-बाल, नेग-चार से एतराज ना है हमको, पर कदर ना है इस पेशा में। . . .कुतुबपुर से ज़्यादा मान-मरजाद था वहाँ। कौनो बात की तकलीफ़ ना थी। सब मिला वहाँ। जनाना . . . बाल-बच्चा, सब मिला। ना-नुकुर करते रहे, पर लोग जबरन फिर से माया-मोह के बन्धन में बाँध दिए। लाज लग रही थी तिबारा दुल्हा बनते। . . .डर लगा रहता है कि मेरे करम में . . .बियाह करना . . . और उस औरत को अपने ही हाथ से फूँक-ताप जाना लिखा हुआ है।

रामानंद : तुम बे-मतलब भी सोचते रहते हो।

भिखारी : एक दुख हो तो कहें बाबू साहेब। कौन-कौन बात कहें. . . और इस पगली बयार का क्या करें, जो हर पहर, हर घड़ी, . . .पल-छिन हमारे भीतर बहती रहती है. . . हिलकोरती रहती है हमको . . .?

रामानंद : हम जानते हैं भिखारी। पूरा ना तो थोड़ा-थोड़ा तो ज़रूर जानते-बूझते हैं तुमको . . . तुम्हारे मन को। ये पगली हवा ही तुम्हारी जिनगी का रथ है। इसी पर सवार होना है। इसी पर सवार होकर जग से, समाज से अपना हक वसूलना है।

भिखारी : बहुत कठिन है बाबू साहेब।

रामानंद : हूँ, कठिन तो है। हम जानते हैं। हाँ भिखारी, हम राजपूत हैं, पर नान्ह जात में जनम लेकर जीने का दरद समझते हैं।

भिखारी : ये दर्द जीने नहीं देता . . . कलेजे में बम गोले की तरह फटता रहता है। भीतर ही भीतर चिथड़ा कर देता है।

रामानंद : इस दर्द को सहेजो अपने भीतर।

भिखारी : अपने हाथ से अपना चिथड़ा सहेजना बहुत कठिन है।

रामानंद : पर सहेजना तो होगा। सहेजो। इसी दर्द से बल-बूता अरजन करो मेरे भाई। लोग डर और स्वारथ से झुकते हैं, पर तुम झुकते हो नेह से। जानते हैं हम। विनय का मतलब रिरियाना ना है मेरे भाई। सूरदास मत बनो। विनय तुम्हारा धरम है और तुम्हारा बल-बूता भी। समझो इस बात को।

भिखारी : और आप?

रामानंद : हम तुमसे अलग हैं? हम साथ हैं तुम्हारे। संगतिया का धरम साथ रहना होता है . . . हर हाल में साथ। हम तो संगतिया हैं तुम्हारे।

भिखारी : रामजी! रामजी हैं आप मेरे।

रामानंद : मत कहो रामजी भाई! लोग ताना मारते हैं। तुम गए, तो दलसिंगार ठाकुर भी बोले कि रामजी को छोड़कर लछुमन वनवास चले गए।

(रामानंद हँसते हैं। भिखारी के चेहरे पर भी फीकी हँसी आती है।)

भिखारी : बाबू बहुत अटर-पटर बोले होंगे।

रामानंद : अरे ना मरदे! बूढ़-पुरनिया आदमी तो कुछ-न-कुछ बोलते ही रहता है। चलें अब।

(भिखारी दोनों हाथ जोड़ते हैं। रामानंद सिंह प्रस्थान करते हैं। प्रकाश सिमटता है। मंच का दूसरा भाग दीप्त होता है। भिखारी ठाकुर पत्नी के साथ बैठे हैं। दीपक जल रहा है।)

मनतुरनी : तुम तो कुतुबपुर आकर परदेसी हो गए। दीया का तेल-बाती सब जल जाता है तुम्हारी राह निहारते-निहारते, पर तुम . . .।

भिखारी : क्या करें! बाप-भाई सब दुआर पर . . . और आँगन में माई-छोटे भाई की जनाना।

सबके छाती पर पाँव रखकर पार कर जाएँ?

मनतुरनी : ना। हम ऐसा ना कहते हैं। . . . उड़ के आओ। माई कहती हैं कि पंछी है मेरा बबुआ। पंछी हो और उड़ नहीं सकते? कैसे पंछी हो जी?

भिखारी : बिना पाँख वाले पंछी हैं हम। जब-जब उड़ते हैं, कोई ना कोई मरोड़ देता है पाँख। नोंच ले जाता है।

मनतुरनी : हम तो कभी ना नोचे हैं तुम्हारा पाँख।

भिखारी : तुमको नहीं कह रहे हैं।

मनतुरनी : दूसरे की हम का जाने! हमको दूसरे से कौनो गरज ना है। हम तो बस अपनी बात जानते हैं कि जब से आए हैं कुतुबपुर, तुम्हारी राह देखते-देखते पियरा गए हैं। एक तो आते नहीं, दूसरे आते भी हो तो चोरी के मरद जैसे। लगता ही ना है कि अपनी बियाहता के पास आए हो। तुम्हारा कलेजा काँपता रहता है कि कौनो आदमी देख ना ले। लगता है, दूसरे की जनाना के घर में घुसे हो।

भिखारी : अब जिस घर में सास-ससुर होगा . . .भरा-पूरा परिवार होगा, . . .वहाँ अपनी मन-मरजी तो ना चलेगी। सबको देखना पड़ता है।

मनतुरनी : सबको देखो, और हमको छोड़ दो। दिन भर गाय-गोरु को देखें, घर-बाहर का काम करें . . . घर-घर जाकर नोह काटें . . . गोड़ रंगें . . . और रात-रात भर दिया जलाकर तुम्हारी राह निहारें।

भिखारी : लगता है कि कौनो आदमी तुम्हारी मति फेर दिया है। कौन हवा-बतास के फेर में पड़ गई तुम? ओझा-गुनी बुलाना पड़ेगा क्या जी? बबुआन टोला गई थी?

मनतुरनी : हूँ। गई थी तुम्हारे संगतिया के घर। बबुआइन का नोह काटना था . . . गोड़ रँगना था। पूछ रही थीं तुम्हारे बारे में।

भिखारी : मेरे बारे में।

मनतुरनी : हूँ। पूछ रही थीं कि. . . तो हम बोल दिए कि जबसे कुतुबपुर आए हैं, बदल गए हैं।

भिखारी : औरत सब भी आपस में बहुत फालतू बतियाती है।

मनतुरनी : बहिना के बारे में बता रही थीं . . .

भिखारी : आमडाढ़ीवाली के बारे में?

मनतुरनी : हूँ। बोल रही थीं कि बहुत सिंगार करती थी बहिना। . . .बहुत सुन्दर थी। एकदम गोर . . .ललकी गोराई थी। माथ बान्ह के, टिकुली साट के चलती थी पानी भरने, तो हवा-बयार तक थम जाती थी।

भिखारी : आमडाढ़ीवाली की बात मत करो। कौनो दूसरी बात ना है करने के लिए?

मनतुरनी : अब हम समझ गए हैं कि तुम कवने कारन बियाह के लिए राजी नहीं थे। खाली औलाद पैदा करने के लिए हमसे बियाह किए तुम। है न साँच बात?

भिखारी : आज तुम्हारा माथा खराब कर दिया है बबुआइन ने। झगड़ा करते रहोगी, तो भोर हो जाएगी। पंछी उड़ जाएगा।

मनतुरनी : वाह रे मरद! जाने के लिए उड़ना आता है और आने के बखत भूल जाते हो? उड़ कैसे जाओगे! हमको भी आता है पंछी के पाँख में लासा लगाना। . . .बोलो! तुम सिरफ औलाद के लिए हमसे बियाह किए? क्या समझते हो औरत को? जाँता? अनाज डाल

दिया और पीसकर आटा-सत्तू निकाल लिया! शिलानाथ के बाबू, औरत सिर्फ फूला हुआ पेट ना होती है। समझे? बेटा . . . बेटा . . . बेटा! बेटा के लिए विलाप करते रहे तुम। बेटी हुई हमको, तो लगा जैसे तुम पर बजर गिर गया हो। अनाज नहीं छूते थे। कौर नहीं उठाते थे। बेटी हुई तो कैसा उछाह था मेरे मन में। पहिली संतान पाकर किसका कलेजा उछाह से नहीं भरेगा! एक तुम थे कि माहुर जैसा मुँह बनाए बैठे रहते थे। मानो विपत गिरी हो माथ पर। बेटा जनना औरत के हाथ में ना होता है। हमारा कौन दोख था? बिना बेटी जने भी औरत का धरम अधूरा रहता है। ऐसे ही किए थे हमारे बाप भी। उनके मन में भी बेटे की साध थी और हम जनम गए। नाम रख दिया मनतुरनी। नहीं सोचे कि जब सयानी होगी, . . .बात समझने-बूझने लगेगी, और जब-जब अपना नाम सुनेगी, तो क्या बीतेगा इसके मन पर। मनतुरनी . . . ! हुँह! शिलानाथ के बाबू, औरत बनकर देखो, तब पता चलेगा दुख और सुख का भेद, दुख और दुख का भेद। मरद बनकर दुनिया का पूरा भेद नहीं जान सकते। अगर हमारी बात पर भरोसा ना है, तो जाकर पूछ लेना कमला बबुनी से।

भिखारी : तुमको कमला बबुनी के बारे में कौन बताया?

मनतुरनी : इससे क्या गरज कि कौन बताया? और इससे फरक क्या पड़ता है?

भिखारी : उनका नाम मत लो।

मनतुरनी : हम आनी-बानी ना बोल रहे हैं। उनकी जिनगी के बारे में सुनकर हमारा तो कलेजा फट गया। खाली फटकर रह जाता कलेजा तो चैन मिलता, पर हमारे कलेजे में आग लग गई है।

भिखारी : मनतुरनी!

मनतुरनी : मत पुकारो हमको मनतुरनी। तुम भी हमको इसीलिए मनतुरनी पुकारते हो न कि तुम्हारा मन भी सोनिया के जनम से टूट गया था?

भिखारी : *(पास जाते हैं। सिर पर स्नेह से हाथ रखते हैं।)* ना! इसलिए नहीं बुलाते मनतुरनी। . . .छोड़ो इस बात को। घाव जब पक जाए तो मवाद निकल जाना अच्छा रहता है। आराम मिलता है। अच्छा ही हुआ कि तुम्हारे मन के घाव का मवाद निकल गया।

मनतुरनी : ना शिलानाथ के बाबू, ना। इस घाव की तासीर गजब है। चलनी के छेद जैसे मुँह वाला घाव है यह। एक सूखता है, तो दूसरा खुल जाता है। . . .हरियर का हरियर बना रहता है हरदम।

भिखारी : हम बूझते हैं तुम्हारा दुख। . . .अच्छा बोलो, तुमको कौन नाम से बुलाएँ?

मनतुरनी : तुम क्या खाक बूझोगे! बूझते, तो नाम पूछते! जाने दो। जो जी में आए . . . वही नाम रख लो। मनतुरनी कहो, चाहे मनजोड़नी। अब हम तो बदलने से रहे।

भिखारी : मानपुरवाली पुकारेंगे।

मनतुरनी : तुम्हारी मरजी।

भिखारी : भोर हो रही है।

मनतुरनी : तुम्हारे लिए हो रही होगी। हमारे लिए तो अभी अधरतिया है।

(मनतुरनी भिखारी के वक्ष से लग जाती है। एक हाथ से उन्हें बाँधती हैं और दूसरे हाथ से दीपक की बाती बुझा देती हैं। मंच पर अँधेरा हो जाता है। मंच का दूसरा भाग दीप्त होता है। गाँव का सार्वजनिक स्थल। एक वृक्ष के नीचे रामानंद सिंह और भिखारी बैठे हैं रामानंद प्रसन्न

हैं। भिखारी के साथ गाते हुए चुहल कर रहे हैं।)

रामानंद : हो मोरे पियउ हेरइलन पलँगे
हो मोरी मुँदरी हेराइल पलँगे पर
हीरा हेराइल मोर
झुलनी हेराइल
हो मोरी सौतन लोमाइल पलँगे पर
हो मोरे पियउ हेरइलन पलँगे पर

भिखारी : *(हँसते हुए)* बाबू साहेब, का बात है? आज तो आप . . .

रामनंद : काहे? हम नहीं गा सकते हैं का? भिखारी! साँच-साँच बोलो . . . कौन कारन सता रहे हो हमारी भौजी को?

भिखारी : हम? . . . हम सता रहे है? हम किसी को सता सकते हैं भला?

रामानंद : आमडाढ़ीवाली होती, तो बीच राह में रोककर पूछ लेते . . . पर तुम ये मत समझना कि मानपुरवाली तक हमारी पहुँच ना है। बहुत बदनामी हो रही है तुम्हारी। सुने हैं कि जब से फतनपुर से लौटे हो दुआर पर ही रात गुजार देते हो। साँच है?

भिखारी : अब आप भी बाबू साहेब। औरत सब के पेट में पानी भी ना पचता है। मानपुर वाली गई थी आपके घर। सब किस्सा मालूम है।

रामानंद : हूँ, कह रही थी बबुआइन कि आपके संगतिया तो बदल गए हैं। औरत चल्हवा मछरी जैसी छटपट करती रहती है और . . .

भिखारी : कल की बात और आज की बात में बहुत फरक होता है बाबू साहेब। पल-छिन में दुनिया बदल जाती है।

रामानंद : सो तो है। पर ध्यान रखो भाई। कोई कुछ भी कह ले, . . . कर ले, . . . पर गाँव की जनाना सबका मुँह-पेट एक होता है। अब देखो, बात हम तक पहुँच गई। और इसको खाली बात मत बूझो। उलाहना है।

(सरूप महतो और गोरख यादव प्रवेश करते हैं।)

दोनों : परनाम बाबू साहेब।

रामानंद : परनाम . . . परनाम!

सरूप : तो रामजी और लछुमनजी की जोड़ी जमी है! आप दोनों को साथ-साथ बोलते-बतियों देखकर लगता है, सहोदर भाई बैठे हैं।

भिखारी : काका परनाम।

सरूप : जीओ बबुआ . . .खूब जीओ।

गोरख : ए भिखारी दलसिंगार ठाकुर कौने कारन तुम पर गरम रहते हैं जी?

भिखारी : का हुआ?

गोरख : हुआ का . . . तुमको खोजते हुए गए। पूछे कि भिखारी कहँवा हैं? बस। इतना पूछना था कि . . .

भिखारी : कुछ अटर-पटर बोल दिए का?

गोरख : ना। बुढ़ऊ हैं तो बहुत महीन। साध कर बोलते हैं . . . एकदम नरम आवाज़ में। पर बात गिरती है लोहार के हथौड़ा माफिक। कलेजा धँस जाता है मरदे।

सरूप : दलसिंगार ठाकुर ही तो बोले कि होंगे अपने रामजी के पास। रामजी-लछुमनजी की

जोड़ी जमी होगी . . . बैठकी चल रही होगी।

रामानंद : *(हँसते हुए)* तुम्हारे बुढ़ऊ भी सुर पकड़ लेते हैं तो . . .

(मिसिरजी और एक युवा का प्रवेश।)

मिसिरजी : *(प्रवेश करते हुए)* ए भिखारी! बहोर लौटे जी?

भिखारी : भोर तक तो ना लौटे थे। उसके बाद का हमको नहीं मालूम।

मिसिरजी : बहोरवा की आदत बहुत खराब है। हितई-पहुनई कहीं जाता है, तो जाकर सती हो जाता है। हमारा परान अटका हुआ है।

रामानंद : परान क्यों अटका हुआ है काका?

मिसिरजी : अरे भाई, छोटकी बबुनी की ससुराल विदाई का दिन लेकर भेजे हैं। हाजीपुर के पास . . . लालगंज। लौटे तब तो पता चले कि . . .

रामानंद : पता क्या चलना है?

मिसिरजी : नकार दिया तब? उसका ससुर बहुत हरामी है! पछिमाहा पंडित है सब, . . .बसा हुआ है लालगंज में।

सरूप : बहुत दूर है पंडित जी।

गोरख : सोनपुर मेला में थेटर देख रहा होगा। लालगंज के रास्ते में पड़ता है।

रामानंद सिंह : तुम भी बकलोल हो जी। जेठ-आषाढ़ में सोनपुर का मेला लगता है कि थेटर देखेगा।

गोरख : पंडितजी के समधियाना गया है। इनके समधी मातबर आदमी हैं। बैठ के दूध-दही चाभ रहा होगा।

सरूप : अब कोई क्या चाभेगा और कोई चभवाएगा! जब मालिकान की हालत अपने खराब है, तो पउनी-परजा को कौन पूछता है! बड़े-बड़े मातबर लोगों की हवा बिगड़ गई है।

मिसिरजी : क्या जी रामानंद बाबू! सुने कि जमीन का लगान सीधे तिगुना हो गया।

रामानंद : सुनना क्या है? जाकर पूछिए राम सुभीत सिंह से। औरत का गहना बेच कर पैसा जमा किए हैं। बीस साल पहले के सर्वे में जमीन कास्तकारी हुआ था। मालिक का लिखा हुआ पट्टा है पास में। . . .मार दिया पलटी मालिक। पटवारी कायथ है। सुभीत बाबू का अँतड़ी दूह दिया। कह रहा था कि नया बन्दोबस्ती करेंगे। . . .औरत का गहना बेचकर लगान भरे।

गोरख : बबुआन हैं, तो सोना-चानी का गहना था। बेचकर धरती बचा लिए। जिसके पास ना है, उसका कौन हाल होगा?

सरूप : बचाकर क्या करेगा कोई? चारों ओर तो आग लगी है। धरती में दरार पड़ रही है। फाट रही है धरती। इतनी उमिर हो गई, पर ऐसा सूखा हम ना देखे थे।

रामानंद सिंह : इसी को करम का फेर कहते हैं। बदनसीबी! गंगाजी-सरयुजी सबके रहते माटी में आग लगी है।

गोरख : हर जगह एक हाल है। खलपुरा . . .डोरी गंज . . . कुल छपरा जिला, . . .आरा . . .जिला कहीं एक बूँद पानी नहीं है।

युवा : क्या बात बतियाते हो जी? आरा . . . छपरा! अरे पूरा देश-दुनिया में हाहाकार है। बंगाला . . .आसाम . . .जहाँ जाओ . . .सूखा है।

गोरख : हम तो सुने हैं कि सीवान-गोपालगंज से आगे तक बड़ जात के लोग मूस पकाकर खा

रहे हैं।

मिसिरजी : ए चोप्प! खाली मनगढ़ बात करता है।

युवा : *(उठते हुए)* चार लाठी लगेगा, तो सब मनगढ़पन घुसर जाएगा।

गोरख : जमीन का लगान कौन कारन से बढ़ रहा है?

रामानंद : बढ़ रहा है! अरे बढ़ गया बाबू!

युवा : अँगरेज सबसे पूछो। भारी लड़ाई चल रही है। अँगरेजवा सब मिलकर कौनो दूसरे मुलुक से अझुरा गया है। चौतरफा मार-काट मची हुई है। इसलिए पैसा वसूल रहा है।

गोरख : लड़ाई में पैसा क्या होगा भाई? तोप-तलवार चाहिए कि रुपिया?

युवा : तोप-तलवार मँगनी में आता है? पलटन को पेट नहीं होता क्या? पगार देने के लिए सर-सरजाम के लिए रुपिया चाहिए कि ना?

गोरख : अच्छा एक बात बताइए . . . खाली अँगरेज सब ही लड़ सकता है? हम लोग न लड़ सकते हैं?

युवा : जाओ, जाकर पलटन में भरती हो जाओ।

गोरख : ना भाई, हम पूछते हैं कि हम लोग अँगरेज से नहीं लड़ सकते? अँगरेज सब साले-साल लगान बढ़ा रहा है, तो एक बार लड़ के गरदा झाड़ दिया जाए।

सरूप : लड़ने वाला लड़ता ही है। बाबू कुँवर सिंह ना लड़े . . . बाबू कुँवर सिंह तेगवा बहादुर के बँगला में उड़ेला अबीर हो . . . आहे बाबू।

मिसिर जी : लड़ाई के बीच में फगुआ गाने लगे।

युवा : बड़का लड़ाकू बने हो? चिरई का कलेजा लेकर अँगरेज से लड़ोगे। देख लोगे गोरका सबको तो खड़े-खड़े मूत दोगे।

भिखारी : जाने दीजिए . . . आप इससे मुँह मत लगिए . . .घर जाइए। बड़ आदमी हैं आप। अपना जबान मत खराब कीजिए।

मिसिरजी : चलें हम। ए भिखारी, बहोर जैसे लौटे, बोलना कि हाल-समाचार दे जाए।

भिखारी : जी मिसिरजी।

(मिसिर जी और युवा लोग निकल जाते हैं।)

भिखारी : कौनो बात का सरूप काका?

सरुप : हूँ। बूटी का बियाह तय हो गया है। तुम्हारे बाबू को बता दिए हैं। एक आदमी को रहना होगा। यही कहने गए थे।

भिखारी : ठीक है काका।

सरूप : चलो जी गोरख।

(दोनों निकल जाते हैं। रामानंद सिंह और भिखारी बैठे रहते हैं।)

रामानंद सिंह : क्या हाल-समाचार है?

भिखारी : अब जिनगी काटना दूभर हो गया है बाबू साहेब! हम आ गए कुतुबपुर, पर बहुत दिन रहेंगे ना।

रामानंद सिंह : क्या हुआ? कवनो बात हुई क्या?

भिखारी : ना। हमको बाहर जाना है। कई दिन से सोच रहे थे कि आपसे राय-सलाह करें। बाबू

साहेब, अब जजमानी और टहलुवई से पेट ना भरेगा। एक तो पउनी-परजा की जिनगी और दूसरे भूखे पेट। बाल-बच्चा परिवार के लिए हाथ में दू-चार पइसा रहना ज़रूरी है। खेती-बाड़ी से इस साल आस नहीं है।

रामानंद : सो तो है। सूखा में सब स्वाहा हो गया। अकाल की नौबत है। नदी कछारे रहते हुए भी धरती में आग लगी है।

भिखारी : हाँ बाबू साहेब, विचार है कि बाहर निकल जाएँ।

रामानंद : कहाँ जाओगे?

भिखारी : कहीं भी।

रामानंद : ऐसे होता है? कुछ तो सोचा होगा।

भिखारी : मेदिनीपुर चाहे खड़गपुर।

रामानंद : कौनो परिचित? हित-नाता?

भिखारी : हाँ, सम्बन्धी लोग हैं। फूफा हैं। जाकर देखते हैं।

रामानंद : ठीक है। खूब सोच-विचार लो। बाल-बच्चा जनाना छोड़कर कमाने के लिए परदेस जाना कौनो बुरी बात ना है। जाओ . . .विचार कर लो . . .बहोर से . . . मानपुरवाली से . . . दलसिंगारठाकुर से . . .।

भिखारी : बाबू को तो आप जानते ही हैं। सुने नहीं कि . . .

रामानंद : अरे मरदे, मत फिकिर करो . . .चलो . . . दलसिंगार ठाकुर को हम समझा-बुझा देंगे। चलो। . . . चिन्ता में परान मत दो।

(दोनों का प्रस्थान। प्रकाश सिमटता है। मंच के दूसरे भाग में प्रकाश)

(कलकत्ता में बाबूलाल का घर। बाबूलाल हारमोनियम बजा रहे हैं। उनके गायन-स्वर के साथ दृश्य खुलता है। सामने भिखारी बैठे हैं)

बाबूलाल : मोरा पिछुवरिया लवँगिया के गछिया
आहे छँहिया आ गइल मोरा अँगनवा।
पिया चलि गइले रे पुरुब के देसवा
आहे सेजिया उजड़ि गइल मोरा अँगनवा।
ललकी रेलगाड़िया रे भइली सौतिनिया
आहे पिया के ले गइली रे कवने नगरिया।

भिखारी : तुम्हारे कंठ में सुरसती का वास है बाबूलाल भाई। बहुत दरद है। बहुत मिठास है।

बाबूलाल : एक बात बूझ लो भिखारी . . . जो आदमी दुख में मिठास खोज ले . . . उसको बहुत तकलीफ़ सहना पड़ता है।

भिखारी : मतलब?

बाबूलाल : मतलब सबका दुख—अपना दुख लगने लगता है। दुख का चस्का लग जाता है। दारु से भी ज़्यादा नशा है दुख में। कलकत्ता का यही गुन है। अजब जगह है कलकत्ता। यहाँ कुछ लोग दुख से आँख मूँद के सुख के लिए पगलाए जीते हैं, तो कुछ कलेजे में दुख लिए बौराए फिरते हैं।

भिखारी : खड़गपुर, मेदिनीपुर, जगन्नाथधाम—सब जगह घूमे। तरह-तरह के लोग से मिले . . . पर सचमुच कलकत्ता अजबे जगह है।

बाबूलाल : हाँ, अजब तो है। अपने देश के लोगों के लिए अबूझ पहेली है कलकत्ता। कोई नहीं

बूझ पाता इसे। समझते-बूझते उमिर सरक जाती है। बाद में पता चलता है कि आह रे बाप, अभी सब बाकी है। सपना माफिक झिलमिल करते रहता है आँख में . . . जादू है, जादू। क्या जनाना, क्या मरदाना . . . क्या देसी—क्या परदेशी, हमको तो यहाँ के लोग ना साँच लगते हैं, ना झूठ।

भिखारी : हम जब आए थे, तो नया-नया में मन करता था कि अधरतिया में हाबड़ा के पुल पर जाकर गंगाजी में कूद जाएँ। खूब छप-छप नहाएँ . . . सारी रात तैरें। फिर पता चला कि रात को तो पुलवा तोड़ देता है। खींच कर हटा देता है। सनीमा-थेटर देखे, तो आँख में अँजोर भर गया।

बाबूलाल : अभी तुम कलकत्ता देखे कहाँ भिखारी! कलकत्ता में जितना अँजोर है, उतना ही अन्हार है भाई . . . भिखारी, तुम बढ़िया किए कि लौट रहे हो। हम भी ना चाहते हैं कि तुम कलकत्ता में रहो। जाओ, अपने गाँव-घर लौट जाओ। कलकत्ता सोने का हिरना है। कलेजे में हूक भर देता है, . . . टीस भर देता है। बस थामे रहो कलेजा। हाथ रिक्शा खींचते-खींचते फेफड़ा फट जाता है। खून बोकर कर भरते हैं लोग। मछरहट्टी में पलदारी करते हुए जो दुरगंध घुसती है नाक से, मरने के दिन तक मगज में बैठी रहती है। चटकल में पटुआ का रेशा छाँटने वाले पगार के साथ दमा की हँफनी घर ले जाते हैं। चार पैसे में एक पैसा भी गाँव तक नहीं पहुँचता मेरे भाई। कुछ पेट में जाता है, तो कुछ रंडी के अँचरा की हवा से उड़ जाता है। गाँव पर जनाना झुलनी पहिनने के लिए नाक छेदवा कर राह देखती रह जाती है और . . .।

भिखारी : रंडी तो कलकत्ता का भारी कोढ़ है। बड़का रोग।

बाबूलाल : ना भिखारी। रंडी तुम देखे कहाँ हो अभी! रंडी भी औरत होती है भिखारी। रंडी ना रहे तो कलकत्ता में, तो यहाँ कुछ भी ना बचे। गंगाजी और रंडी—यही दूनो तो कलकत्ता को जिलाए हुए हैं। सबका पाप, . . . सबका नरक यही दूनो सहेजती हैं।

भिखारी : बाबूलाल भाई, तुम तो फिर भी यहीं बसे हो।

बाबूलाल : कौन बसा है? हम? *(हँसते हैं।)* हम बसे ना हैं। बस दिन काट रहे हैं। हम भी लौटेंगे। तुम लौट जाओ भिखारी। इस सोने के हिरना की नाभि गाँव में ही है। यहाँ तो खाली हिरना है, बिना नाभि वाला। . . . हाथ में क्या है?

भिखारी : पोथी है। तुलसी बाबा का रामायन। हमको तो इसी में चैन मिलता है। मेदिनीपुर में रामलीला देखे, तब से इसी में परान अँटका है। मन लपटा गया है रामायनजी में।

बाबूलाल : अच्छा है। लोग रुपिया-पैसा, कपड़ा-लत्ता, दुख-बीमारी, सपना-मउवत लेकर जाते हैं कलकत्ता से . . . और तुम जा रहे हो तुलसी बाबा की पोथी लेकर।

भिखारी : हाँ, बाबूलाल भाई। इस पोथी में सब कुछ है। सिया-सुकुमारी से मंदोदरी तक, जिनगी का हर रस है . . . पर कलकत्ता से और भी बहुत कुछ ले जा रहे हैं।

बाबूलाल : कौन-कौन चीज़ है भाई। हमहुँ तो सुनें।

भिखारी : बता सकना कठिन है, महाकठिन। मन के भीतर सब है, पर बानी नहीं है कि बता सकें। पर भरोसा है कि एक दिन सब कह सकेंगे . . . सुना सकेंगे। बस, सुरसती माई की किरपा हो जाए . . . बानी मिल जाए।

बाबूलाल : बहुत आकुल हो भाई। . . . यह अकुलाना ही राह पार करवाता है। बस अकुलाए रहो। इसी से राह मिलेगी और इसी से पार भी लगेगी राह।

भिखारी : जल्दी आना बाबूलाल भाई।

बाबूलाल : हूँ। जल्दी ही लौटेंगे। तुम हमारे गाँव चन्ननपुर सनेस भिजवा देना कि यहाँ हम राजी-खुशी हैं।

(बाबूलाल, भिखारी को विदा करते हैं। भिखारी निकलते हैं। प्रकाश सिर्फ़ बाबूलाल पर केन्द्रित है। वे भिखारी को जाते हुए देखते रहते हैं। भिखारी के जाने के बाद बाबूलाल गाते हैं, बिना किसी वाद्य-यंत्र के।)

बाबूलाल : नेहिया लगा के दुखवा दे गइले रे परदेसी सइयाँ।
बिरहा जलावे छाती नींदियो ना आवे राती।

(अन्तरा की इस पंक्ति के साथ ही बाबूलाल पर केन्द्रित प्रकाश धीमा होता है और मंच के दूसरे भाग में उभरना शुरू होता है। अंतरा की इस पंक्ति को गाती हुई मनतुरनी दिखती है।)

बाबूलाल : बिरहा जलावे छाती नींदियो ना आवे राती
कठिन कठोर जियरा हो गइले रे परदेशी सइयाँ।

(मनतुरनी के सामने भिखारी खड़े हैं। उन्हें निहार रहे हैं। मनतुरनी रो रही हैं। रोते-रोते भिखारी के कंधे पर सिर टिका देती है। भिखारी उन्हें बाहों में सहेजते हैं।)

मनतुरनी : कहाँ चले गए थे? इतना-इतना दिन परदेस रहोगे, तो हम कैसे जिएँगे?

भिखारी : हम तुम्हारा दुख बूझते हैं। हम भी तो अकेले ही परदेस की जिनगी काट रहे थे! कौन था हमारे साथ? ना बाप-भाई, ना बाल-बच्चा . . . और ना तुम थीं।

मनतुरनी : हमको कलकत्ता से बहुत डर लगता है।

भिखारी : तुमको क्यों डर लगता है? तुम तो देखी न हो कलकत्ता। फिर बिना देखे का डर कैसा?

मनतुरनी : डर की मत पूछो शिलानाथ के बाबू! औरत जब पैदा होती है, तो महतारी के दूध के साथ पहले डर पिलाया जाता है उसको। हमारी माई हमारे जनम के बाद एक गीत गाती थी—जो हम जनतौं कि धिया कोखि जनम लिहें/पियतौं में मरीच झरारि हे। . . . पता होता कि बेटी जनमेगी तो महतारी मरीच पी लेती। गरभ में ही डर। साँच कहें, तो हमको कलकत्ता से डर ना था। हम तो तुम्हारे ख़ातिर डर रहे थे . . .

भिखारी : हमारे ख़ातिर डर?

मनतुरनी : छोड़ो अब इस बात को। बताओ, कैसा देस है कलकत्ता?

भिखारी : ग़ज़ब देस है। देस-भेस, बोली-बानी, खान-पान सब अलग। पर अपने देश के लोग भी बहुत हैं।

मनतुरनी : सुने हैं कि कलकत्ता की जनाना सब जादू जानती है। काला जादू। मरद को भेड़ा बनाकर पोसती है।

भिखारी : जादू तो तुम भी जानती हो।

मनतुरनी : हम? हम जादू जानते हैं?

भिखारी : तुम्हारे जादू जाने बिना हम तुम्हारे पोसुआ कैसे हो गए? बोलो।

मनतुरनी : तुमको कोई पोसुआ नहीं बना सकता। एक तो मरद जात—स्वारथी जात। दूसरे तुम। दूसरे मरद का स्वारथ तो दिख भी जाता है, पर तुम्हारा? तुम्हारा स्वारथ तो दिखता भी नहीं।

भिखारी : हम स्वारथी हैं?

मनतुरनी : ना होते स्वारथी तो हमको अकेले छोड़कर . . . देस-परदेस घूमते फिरते! तुम तो गए थे कमाने। बोलो गए थे न? फिर जगन्नाथ धाम-कलकत्ता कहाँ-कहाँ घूम आए! ना कौनो चिट्ठी-पत्री, ना कौनो खोज-खबर! माई बहुत रोती थी। बाबू भी रात-रात भर जागते रहते थे। तुम रहते हो तो गरम होकर बोलते रहते हैं, पर जब से तुम गए, बाबू की बोली-बानी सब बन्द . . . अकाल का समय। अकेले बहोर के कपार पर सारा बोझ।

भिखारी : और तुम?

मनतुरनी : हमारी छोड़ो।

भिखारी : क्यों छोड़ दें तुम्हारी बात?

मनतुरनी : हमारी समझ सको, तो समझ-बूझ लो। समझाने से हमारी बात ना समझ सकोगे औरत का मन खोह होता है शिलानाथ के बाबू। सब कोई ना उतर सकता है खोह में उतरने वाला राह नहीं पूछते फिरता है।

भिखारी : मनतुरनी!

मनतुरनी : हाँ, शिलानाथ के बाबू। हम तो औरत हैं। मूरख जात। हम तुमको राह नहीं बता सकते। राह पूछोगे, तो जिनगी भर पूछते रह जाओगे। राह बनाओ शिलानाथ के बाबू। सबके बूते की बात नहीं खोह में उतरना। बूता चाहिए . . . हिम्मत। तुम तो बिलार जैसे म्याऊँ-म्याऊँ करते हो खाली। बिलार आँख भी तरेड़ता है . . . गुर्राता है . . . बखत पड़े तो झपट के ले भी भागता है।

भिखारी : किसके भरोसे आँख तड़ेरें? किसके बूते पर गुर्राएँ? झपट के ले लें, तो भाग के जाएँगे कहाँ?

मनतुरनी : अपने भरोसे . . . अपने भरोसे शिलानाथ के बाबू। दूसरे के बूते से पहलवानी नहीं होती। और जो झपट के ले भागता है, उसके लिए दुनिया का हर कोना अपना होता है।

भिखारी : बत्तीस दाँत के बीच जीभ की तरह जीना है। अब हमसे पउनी-परजा की जिनगी पार ना लगेगी। खेती-बाड़ी में मन नहीं लगता। परदेस गए तो बौराह की तरह भटकते रहे। देखो, रामायनजी की पोथी लेकर लौटे हैं। सोचते हैं, रामलीला करेंगे। मेदिनीपुर में रामलीला देखे . . . कलेजा जुड़ गया . . . आत्मा को बहुत भरोसा मिला।

मनतुरनी : सुनो, तुम जोगी बन जाओ। साधु बाबा। धुनी रमाओ . . . पोथी बाँचो . . . पर रहोगे हज्जाम ही। कौनो पंडित . . . राजपूत-अहीर कोहरी-कुरमी तुम्हारा पाँव नहीं छुएगा। समझे? जोगी ही बनना था, तो लौटे क्यों? गंगा सागर चले जाते . . .

भिखारी : तुम बात ना समझ रही हो।

मनतुरनी : तुमको पंडित बनने की लालसा लगी हुई है। इस जनम में तो तुम्हारी लालसा ना पूरी होगी। छुरा-कैंची गंगाजी में फेंक दोगे, तो भी।

(मनतुरनी चली जाती हैं। भिखारी उन्हें जाते हुए देखते रह जाते हैं।)

मध्यांतर

(मानस की दो पंक्तियाँ नेपथ्य से सुनाई पड़ती हैं और प्रकाश होता है। भिखारी कुछ लोगों के साथ अपने घर के सामने बैठे हैं।)

जगदेव : एकदम उदास-उदास लग रहा है। बारात विदाई के बाद बेटी वाले का घर सूना हो जाता है, ठीक वैसे ही लग रहा है।

जगधारी : हाँ, कल तक रामलीला का चिलफिल मचा हुआ था। ये लाओ . . . ओ लाओ . . . मुकुट नहीं है . . . तो धनुख-बान कहाँ है? बाप रे!

बंगाली : ठीक बखत पर हनुमानजी की पूँछ गिर गई। आहि रे बाप।

मुखलाल : परभुआ के बेलाउज में हाथ डाल के जगधरिया गेन्दा खींच लिया। परभुआ तो लगा खून पी जाएगा।

भिखारी : चुप रहो मरदे। जो हुआ सो हुआ।

जगदेव : हाँ, अब खाली बतकुच्चन से नहीं होगा। जिसके-जिसके घर से सामान आया है, बाँस . . . चौकी, परदा का चादर उसको लौटाना भी तो होगा। चलो सब आदमी मिलकर काम निबटा दिया जाए।

भगवान साह : भिखारी, तुम बेकार रामलीला के झंझट में फँस गए। चिरइया की जान जाए और खवइया का स्वाद। सब लोग महीना भर से कोल्हू के बैल जैसा खट रहे हैं और ऊपर से बदनामी भी कपार पर। किसी की जात जा रही है, तो किसी की नाक कट रही है।

जगधारी : रात भर बैठ के सब कोई मजा लिया और भोरे होते छीछालेदर!

भिखारी : धरम के काम में, रामायनजी के खेल में भी जात-पात चलेगा हम ना सोचे थे।

भगवान साह : बंद करो। अगले साल से बस झाँकी निकालो। रामजी, सीताजी, हनुमानजी बना कर बैठा दो। खेल खतम!

जगदेव : ए भइया, रुपिया-पइसा सब धर लो अपने पास। हमसे अब इसको ढोना पार ना लग रहा है। भारी झंझट है।

जगधारी : बहुत भारी है?

जगदेव : ए चोप्प!

भगवान साह : क्यों जी एकदम परुआ बैल जैसा पल्ला फेंक कर भाग रहे हो?

जगदेव : अब हम परुआ हैं, तो हैं। तुम्हारे जैसा मरखाह बैल कैसे बन जाएँ।

भिखारी : भगवान भाई, हिसाब-किताब कर लो। सब खरचा-बरचा देख लो। जिसका बाकी-उधार हो चुकता कर दो। बचे, सो अपने पास जमा कर लो। अगले साल के लिए कुछ सोचा जाएगा, तो काम आएगा।

भगवान साह : अब नौ महीना इसको कौन ढोएगा भाई?

बंगाली : ढोओ। तुम ढोओगे, और कौन! तुम जमा करते हो, तो भौजी ढोती है कि ना? सुने हैं कि फिर होने वाला है . . .

भगवान साह : चुप ना रहोगे?

भिखारी : चुप रहो बाबू। अपने से बड़े आदमी का मान-मरजाद नहीं उतारते।

जगधारी : तो अभी क्या हुकुम है व्यास जी?

बंगाली : व्यास जी कि रामायनजी?

भिखारी : हँसी उड़ाते हो?

बंगाली : ना रे बाप! हँसी! ऐसा पाप हम ना करेंगे।

भिखारी : साँझ के बखत सब आदमी का जुटान होगा।

भगवान साह : कहाँ?

भिखारी : ब्रहमस्थान पर!

(दलसिंगार ठाकुर प्रवेश करते हैं। उनके आते ही सब जाने लगते हैं।)

दलसिंगार : हमारे आते ही मजलिस क्यों टूट गई बाबू? *(व्यंग्य से)* बिराजिए देवतागन। हम सभा-संगत में बाधा डालकर पाप का भागी थोड़े बनेंगे!

(सब चले जाते हैं। भिखारी बैठे हैं। शिवकली बाहर निकलती हैं।)

शिवकली : *(दलसिंगार से)* चलो, खा लो।

दलसिंगार : हम ना खाएँगे। अन्न-जल त्याग चुके हैं।

शिवकली : कब त्यागे जी?

दलसिंगार : गाँव में ढोल-ताशा पिटवा कर त्यागें क्या? जब एक बार कह दिए कि त्याग दिए, तो त्याग दिए। अब कपार पर क्यों खड़ी हो? जाओ।

शिवकली : अन्न-जल त्यागने से घर-गिरहस्थी चलती है! तुम उपवास रहोगे, तो कोई बाल-बच्चा खाएगा? कौन चूक हुई है कि समूचे परिवार को सजाय दे रहे हो?

दलसिंगार : अन्न-जल! अरे हम तो परान त्यागने को तैयार बैठे हैं। किसी दिन चल देंगे। कौनो आदमी हमारी बात सुनने को राजी नहीं है। कौनो आदमी को रोजी-रोटी की फिकर ना है। खेत-बधार, माल-मवेशी, जजमनिका—सबकी फिकर हमारे माथ पर।

शिवकली : बहोर ना करता है क्या? तुम्हारे माथ पर तो कोई बोझा नहीं है। सब लोग मिल-जुलकर कर ही रहे हैं। तुम्हारे जिम्मे है दुआर पर बैठकर हुकुम चलाना, सो चलाते ही हो।

दलसिंगार : अपने बड़का बबुआ से ना पूछती हो?

(भिखारी सिर झुकाए बैठे हैं)

शिवकली : हर आदमी एक रकम ना होता है। सबका सुभाव-बेवहार अलग-अलग होता है।

दलसिंगार : जनम लिए हज्जाम के घर और चले हैं पोथी-पतरा बाँचने। दू अच्छर जोड़-घटाकर बाँचना का सीख लिए, लगे रामायनजी बाँचने।

शिवकली : उसके रामायन बाँचने से तुमको क्यों दर्द होता है जी? बियाए पतोहू और चिल्लाए सास।

दलसिंगार : इनके रामलीला से समूचे गाँव में खुसुर-फुसुर चल रही है। भीतर-भीतर खदबदा रहा है। बबुआन टोला, पंडित टोला, हर जगह तुम्हारे बबुआ के मनबढ़पन से धुआँ उठ रहा है। कौनो दिन लाठी-भाला निकलेगा। भुगतना तो हमको पड़ेगा? इनके माथ पर कौन ज़िम्मेदारी है?

शिवकली : झूठ बात का बतंगड़ बनाते हो तुम। जिसके मन में जो आए, कहे। हमारा बेटा कोई बदचलनी का काम ना कर रहा है। रामलीला करना कौनो पाप है? पुन्य का काम है। पुन्य ख़ाली बड़का जात की बपौती ना है। समझे! चलो, कुछ खा-पी लो। पेट में दू कौर अनाज रहेगा, तो किरोध अपने आप मिट जाएगा। खाली पेट रहोगे, तो बात-बेबात पेट की आग माथ पर चढ़ते रहेगी। चलो।

(दलसिंगार भीतर जाते हैं। शिवकली भी। भिखारी बैठे हैं। नेपथ्य से कबीर की पंक्तियाँ गूँजती हैं।)

नेपथ्य स्वर : जियरा मेरा फिरै रे उदास।
जरै सरीर यहु तन कोई बुझावै।
अनल बहै निस नींद न आवै।
जियरा मेरा फिरै रे उदास।

(रामानंद सिंह प्रवेश करते हैं।)

रामानंद : ऐसे मुँह बनाए क्यों बैठे हो?

भिखारी : *(उठकर दोनों हाथ जोड़ते हैं)* परनाम बाबू साहेब!

रामानंद : क्या बात है?

भिखारी : कुछ ना है। बस, ऐसे ही।

रामानंद : उदास-निरास रहने से काम ना चलेगा। अभी तो पहिला डेग धरे हो। दूसरा डेग धरना बाकी है। जो धरती जुग-जुग से तप रही है, वो पाँव तो जलाएगी ही। घर-परिवार, गाँव-जवार—सब घेरा डालेंगे। पर जुद्ध तो लड़ना है मेरे भाई। जात-पात का फन्दा कोई नया फन्दा तो है नहीं। भिखारी, एक दिन आएगा, जब लोग तुमको समझेंगे।

भिखारी : रामलीला में जो बवाल हुआ, हम उससे डरे ना हैं। डरेंगे भी नहीं। हमको भी मालूम है कि इसी के बीच से राह निकलेगी। हाँ, इस रीत पर हँसी ज़रूर आती है। गजब की रीत है कि . . . राजपूत-कायथ को जादव नहीं मारेगा। लोहार राम नहीं बनेगा. . .कुम्हार हनुमानजी नहीं बनेगा। मल्लाह सीता माई का रूप नहीं धरेगा . . .दुसाध को रावन क्यों बना रहे हो? रावन राक्षस था, भूल गए, पर दुसाध याद रहा। आप ना रहते तो भला अकेले हमसे पार लगता।

रामानंद : सब पार लगेगा। तुम अपना काम करो।

भिखारी : परिवार भी तो पीछे लगा है। बाबू क़ा दुख समझते हैं हम। पर क्या करें?

रामानंद : अपने बाबू की फिकर छोड़ो। हम जानते हैं दलसिंगार ठाकुर को। उमिर हुई। नरमदिल आदमी हैं। कौनो बाहरी आमदनी नहीं है।

भिखारी : बाबू साहेब। रामलीला से गुजर-बसर तो चलेगा नहीं। हम चाहते हैं, नाच पार्टी बनाना। अपना दल। पर जिस तरह का चलन है आजकल, उस तरह का नहीं। एकदम अलग, तुलसी बाबा के रामायनजी के चलन पर। अपनी बोली-बानी में अपने गाँव-समाज की जिनगी का सुख-दुख जोड़ना और दिखाना चाहते हैं हम।

रामानंद : बहुत कठिन काम है। रसगर बात बिना दू घड़ी भी कौनो आदमी ना सुनेगा, ना देखेगा।

भिखारी : रस तो होगा बाबू साहेब। रस होगा। रस कहाँ नहीं है? हर जगह रस है। हर हाल में है। दुख में, सुख में, सब में रस है।

रामानंद : तो करो। काम तो तुम्ही को करना है। तुमको रोक कौन रहा है?

भिखारी : लोगों को जमा करना होगा। अपना दल बाँधना होगा पहिले। हमको बहुत अनुभव नहीं है। जो लोग पहिले से नाच में हैं, हमारे जैसे नौसिखुआ आदमी पर क्यों भरोसा करेंगे? उनका चाल-चलन पहिले से ही इतना फूहड़ है कि कुछ मत पूछिए . . .।

रामानंद : सुधारो। बनाओ नया आदमी। पूरा जिला-जवार घूमकर देखे हो। इसके-उसके-सबके पीछे-पीछे भागे हो। बाहर से बहुत कुछ देख-सुन कर लौटे हो। कौन दिन काम आएगा सब? धोबी-धोबिन वाला जो लिख रहे थे, पूरा किए?

भिखारी : माता सुरसती चाहेंगी, तो होगा पूरा। पहिला खेला इसी का करना चाहते हैं। आप?

रामानंद : हमको भी नचवाओगे क्या जी? सब राजपूत मिलकर हमको जात बाहर कर देगा। *(हँसते हैं)* हम तुम्हारे साथ हैं। पीठ पर खड़े हैं तुम्हारे। चलते हैं। हमको छपरा जाना है। कल लौटेंगे।

(रामानंद उठते हैं। भिखारी दोनों हाथ जोड़ उन्हें विदा करते हैं। बाल-दाढ़ी बनाने का सामान खोलकर उसे निहराते हैं। फिर समेटकर रख देते हैं। प्रकाश सिमटता है और पुनः दीप्त होता है। रात्रि का प्रकाश। भिखारी कागज-दवात-कलम लिए बैठे हैं। गुनगुना रहे हैं।)

भिखारी : पपिहा बन प्रान बोले
तन तो सितार भइल।
भूख गइल प्यास गइल,
आँखियन के नींद गइल।
सबद-सबद जोड़े में
रात से बिहान भइल।
खोजे मिले ना सुख
आखर-आखर में दुख
कविताई रात-दिन
मनवा बेहाल भइल
पपिहा बन प्रान बोले।

(स्वप्निल प्रकाश और संगीत फेड-इन होता है। भिखारी जैसे स्वप्न देख रहे हैं। उनके सामने एक प्रकाशवृत्त उभरता है। उसमें एक स्त्री सफेद वस्त्रों में खड़ी है।)

भिखारी : कौन?

कमला : हम हैं . . . कमला।

भिखारी : कमला बबुनी! आप यहाँ कैसे आ गईं? हमको बुलवा लेतीं। हम हाजिर हो जाते।

कमला : तुम तो कुतुबपुर छोड़कर जाने कहाँ-कहाँ भटकते रहते हो! कौन दिशा में खोजे तुमको? गाँव छोड़कर गए। लौटे। फिर परदेस गए। तुमको परदेस से लौटे भी जमाना हो गया, पर एक दिन भी ना आए।

भिखारी : मानपुरवाली पूछ रही थी आपके बारे में।

कमला : क्या पूछ रही थी?

भिखारी : यही, हाल-समाचार।

कमला : पिछले बरिस कुतुबपुर गए थे, तो आई थी मिलने। बहुत सुन्नर है, पर हमारी आमडाढ़ी वाली भौजी से कम . . .।

भिखारी : अब आप बहुत कम आती हैं कुतुबपुर?

कमला : बाबूजी थे, तब तक नैहर था। भाई-भौजाई किसका होता है? बिना माई-बाप का नैहर सूना लगता है। तुम भी तो खोज-खबर ना लेते हो।

भिखारी : कमला बबुनी, साहस ना होता है। चाहते तो हैं कि आएँ, पर हिम्मत हार जाते हैं।

कमला : सुने हैं कि कविताई करने लगे हो? नाच पार्टी बना लिए हो . . . खेल-तमाशा लिख रहे हो!

भिखारी : कविताई क्या करेंगे, बस ऐसे ही दू-चार आखर जोड़ लेते हैं। भगवान साह ककहरा सिखा दिए, तो इतना भी कर ले रहे हैं। भला मूर्ख आदमी क्या कविताई करेगा!

कमला : हमको याद करते हो?

भिखारी : बहुत। बहुत याद करते हैं कमला बबुनी। कलकत्ता गए तो हर घड़ी आप ही थीं मेरे मन में . . . आत्मा में . . .। आँख में आप ही बसी थीं। हमसे कलकत्ता सहा नहीं जा रहा

था। पत्थर का कलेजा करके दिन काटे कलकत्ता में। सोचते थे . . . सब झूठ होता . . . कहीं तो दिख जाते पाहुन . . . कहीं तो मिल जाते! . . .तो कैसे बदल जाती दुनिया . . .।

कमला : खाली सपना देखते रहते हो। साँच, साँच होता है। साँच को झूठ में बदलना चाहते हो? नसीब भी बदलता है कहीं। यही नसीब था मेरा।

भिखारी : बहुत दिन हो गया आपको देखे। आपको देखने का बहुत मन कर रहा है। . . .पर बोले तो कि हिम्मत हार जाते हैं। आप जब पहिली बार बिना सुहाग के सामने आकर खड़ी हुईं—कलेजा फट गया। तबसे हिम्मत ना होती है कि आपको देखें।

कमला : हमारे दुख से दुखी मत रहो भिखारी। औरत का जनम, दुख का जनम है। दुख ही जनमता है औरत का रूप धर के।

भिखारी : हम भी औरत बनना चाहते हैं।

कमला : नहीं जी सकोगे औरत बनकर। बहुत कठिन है औरत में जनम लेकर जीना।

भिखारी : कमला बबुनी, हम आपका दुख अपने कलेजे में छिपाकर जीते हैं।

कमला : कविताई करने लगे?

भिखारी : ना बबुनी, ना। ऐसी हुनर कहाँ? कविताई ना कर रहे हैं।

कमला : तो करो। हमारा दुख बोझा की तरह मत ढोओ। पसार दो धरती पर . . . लोग जानें-बूझें कि जिसका पति कलकत्ता जाकर बिला जाता है, उस पर क्या बीतती है! जिसका आदमी देखते-देखते कपूर जैसे उड़ जाए . . . वो औरत अपनी ही आग में जलकर कैसे धुँआती रहती है! . . .लोगों को बताओ कि जिसका सुहाग बिना कौनो हाल-समाचार के उजड़ जाता है, उसकी जिनगी कितनी दूभर होती है!

(सिसकने की ध्वनि। कमला पर से प्रकाश सिमट जाता है। भिखारी चौंककर उठते हैं। स्तब्ध हैं। पानी पीते हैं। फिर बैठते हैं। कागज-कलम टटोलते हैं। बेहद आकुल दिखते हैं। प्रकाश सिमटता है। मंच के दूसरे भाग में प्रकाश होता है। सूर्योदय से ठीक पहले का समय। भिखारी बैठे है। उनके सामने कागज-कलम-दवात रखा है। सारी रात जगे हैं। सोचने की मुद्रा में हैं। नेपथ्य से गायन होता है।)

नेपथ्य स्वर : मन तकली जस नाचे
मरम न काहू बाँचे।।
अरुझे धागा, मनवा अरुझे
कौन बताए साँचे।।
ऊँची-नीची बनी डगरिया
डेग मोरा कोई साजे।।
ऊँची लागे सबद अटरिया
चढ़ते जियरा काँपे।।
मन तकली जस . . .

(नेपथ्य स्वर के समाप्त होते ही स्त्री का रुदन-स्वर फेड इन होता है। दूर से आते इस स्वर में कई स्त्रियों का रुदन-स्वर शामिल हो जाता है। अफ़रा-तफ़री मचती है। लोग इस स्वर को सुनकर इधर-उधर आने-जाने लगते हैं। सब एक दूसरे से जानना चाहते हैं कि 'हुआ क्या?' भिखारी भी मंच पर हैं। घर के लोगों को आवाज़ देते हैं।)

भिखारी : माई! ए माई! क्या हुआ? बहोर! ए बहोर! अरे देखो जी, कौन रो रहा है?

बहोर : *(बाहर आते हुए)* पूरुब टोला से आवाज़ आ रही है . . .लगता है कोई गुजर गया?

दलसिंगार : अरे अपने मन से हाल-समाचार मत गढ़ो। पता करो।

बहोर : माई निकली है बाहर। सबसे पहले वही सुनी। . . .सुनते ही भागी है।

भिखारी : कल साँझ तक तो ठीक था . . . कोई बीमार तो था नहीं!

बहोर : अरे कहीं सास-पतोहू का झगड़ा हुआ होगा . . . चाहे बाहर से कौनो गमी का हाल आया होगा।

दलसिंगार : तुम रह गए बकलोल के बकलोल। अपने मन से दस तरह का भँवरजाल बनाने लगते हो। जाकर पता तो करो।

(जाने लगते हैं, तब तक शिवकली बाहर से प्रवेश करती हैं। उनके साथ गाँव के तीन-चार लोग भी हैं।)

दलसिंगार : का हुआ जी?

शिवकली : बहुत ख़राब समाचार है . . . भरी जवानी में अपना परान हत लिया औरत ने। बाप रे . . .

बहोर : कौन माई?

शिवकली : अरे हम कैसे बोलें ए बाबू! हमारा तो मुँह ना खुल रहा है। हे भगवान . . . हे भोलेनाथ . . .

दलसिंगार : साफ़ क्यों नहीं बताती हो जी! तुम एतना खेला क्यों करने लगती हो?

जगदेव : तिवारीजी के घर गमी हो गई।

बंगाली : उनकी पतोहू माहुर खा के परान दे दी।

शिवकली : अरे अभी कौनो उमिर ना थी बाबू। काँच देह। ना बाल, न बच्चा। गवना में आई, तो नैहर भी ना गई थी!

बहोर : कौन पतोहू जी?

जगदेव : छोटकी पतोहू। जदुनाथ तिवारी की जनाना।

बंगाली : बड़की तो बाल-बच्चेदार है।

दलसिंगार : रामबरन तिवारी की पतोहू . . .?

बहोर : जदुनाथ उनके ही बेटा हैं ना।

भिखारी : क्या हुआ था? कुछ पता चला?

मुखलाल : पता क्या चलना है। सब पता है।

शिवकली : बहुत दुख में थी बाबू . . . भगवान बैरी को भी इतना दुख ना दे।

बहोर : अच्छा काम किया है। जान देने में ही भलाई थी उस जनाना की।

भिखारी : जान देने में कौन भलाई?

बहोर : तो क्या करे? रोज-रोज मरने से बढ़िया होता है एक बार मरना। गवना आई तबसे गिध जैसा मास नोच रहा था उसका ससुर। रामबरन तिवारी आदमी है? राक्षस है राक्षस।

मुखलाल : कसाई है साला।

शिवकली : अरे चुप करो बाबू।

जगदेव : चन्नन-टीका लगाकर रामायनजी का पोथी बाँचता है और चाल-चलन रावन का।

बंगाली : रावन मत कहो जी। रावन तो बड़का बिद्मवान था।

भिखारी : जदुनाथ तिवारी कहाँ हैं?

बहोर : बंगाला है। कौनो मारवाड़ी के मंदिर में घंटी डोलाता है और यहाँ बुढ़वा साला पतोहू को नोचता है।

भिखारी : कितना सहेगी कवनो जनाना!

दलसिंगार : हम जा रहे हैं पुरुब टोला। अब गमी है तो जाना चाहिए।

(दलसिंगार निकल जाते हैं)

बहोर : बुढ़वा को कौन गमी है?

जगदेव : उसका तो मुँह देखना पाप है।

दलसिंगार : चुप रहो सब जने। ढेर बढ़-बढ़कर मत बोलो।

शिवकली : गाय जस सिधुआ जनाना थी।

बंगाली : बहुत सुन्नर थी।

शिवकली : अरे बाबू! इतना सुन्नर कि मत पूछो। सोने जैसा रंग था . . . एकदम गोर . . . नोह काटने जब-जब जाती थी—काकी-काकी बुलाती थी। अरे आग लगे इस बाहर की कमाई में . . .

(शिवकली देवी चली जाती हैं।)

मुखलाल : बड़की पतोहू को भी तंग करता था।

भिखारी : रघुनाथ तिवारी की जनाना को?

बंगाली : पर वो हाथ ना लगी। नैहर सनेस भेजकर भाई को बुला लिया और जबरन चली गई। जब नौकरी छोड़ के लौटे रघुनाथ तिवारी, तब आई ससुराल . . .।

भिखारी : हम ही गए थे सनेस लेकर। मशरख के पास नैहर है उसका।

शिवकली : *(बाहर निकलते हुए)* अब बंद करो बाबू। दस मुँह, दस बात। कौनो बात मुँह से निकल गई और पसर गई समूचे गाँव में तो फजीहत हो जाएगी। बड़का लोगों की बड़की बात। जाओ जी बहोर, तिवारी जी के घर पता कर लो, कब अरथी निकलेगी। अपने घर का जजमनिका है। घाट जाना होगा। *(शिवकली भीतर चली जाती है।)*

जगदेव : सुने है कि चन्ननपुर वाले बाबूलाल भाई आ रहे हैं।

भिखारी : दू चार दिन में।

मुखलाल : अब तो अगले लगन की तैयारी में लगना होगा . . .

भिखारी : हाँ, सो तो है।

जगदेव : देर करोगे तो आदमी लोग इधर-उधर खिसक जाएगा। बाहरी आदमी लोग मंडरा रहा है। इसी फाँका में लोग जोड़-तोड़ के चक्कर में भटकते हैं।

बंगाली : सबका हाथ ख़ाली रहता है। लालच में फँस जाता है आदमी। बयाना का रुपिया लेकर बहेलिया जैसा घूमता है सब।

भिखारी : रुपिया कौनो ख़राब चीज़ ना है, पर ख़ाली रुपिया वास्ते परान दोगे, तो एक दिन ना जी सकते हो। सब होगा, चिन्ता मत करो।

मुखलाल : नया खेला लिखा रहा है?

भिखारी : सब होगा। सबुर करो भाई।

दलसिंगार : *(प्रवेश करते हुए)* यहाँ कौनो खजाना गड़ा हुआ है क्या कि नाग देवता जैसा आसन जमा कर सब जने बैठो हो। एक के बाद एक विपत गिर रही है कपार पर और

सब जने यहाँ बैठ के बतकही में अझुराए रहो।

जगदेव : क्या हुआ काका?

दलसिंगार : तुम लोगों को हल्ला-गुल्ला भी ना सुनाई पड़ता है का जी? जाकर देखो दुसाध टोला में। मोतिया बहू की लाश आई है।

बंगाली : आहि रे बाप! लाश!

मुखलाल : अरे कल तो मिली थी। गोदी में लड़िका लिए डोरीगंज बाज़ार से लौट रही थी।

जगदेव : हुआ क्या?

दलसिंगार : हमारा मुँह मत खुलवाओ। जाओ। जाकर पता करो। बैठ के कचहरी में बहस मत झाड़ो . . . *(सोमारु और जगधारी उत्तेजित स्थिति में लाठी लिए प्रवेश करते हैं)*

जगधारी : चल रे चल तो!

जगदेव : अरे बात बताओगे पहिले?

सोमारु : तुमको बाते नहीं मालूम हैं। मऊगा कहीं का! निकाल लाठी, चल जल्दी।

भिखारी : बात बताओ बाबू, पहिले बात बोलो। सब कोई चलता है। सब बात तो कहो।

सोमारु : क्या कहें काका? मोतिया बहू भौजी रात डूबकर मर गई। गंगाजी के छाड़न में एक मील दूर लाश मिली है। सबसे पहिले बिन्द टोला के लोग देखे। सरजुगवा पहचाना कि अरे मोतिया बहू भौजी है!

भिखारी : हुआ क्या था?

जगधारी : रात को, अधरतिया के बाद भागी और कूद गई। पुरुब ओर उसकी लाश मिली। बिन्द टोला वाले लाश लेकर आए हैं।

भिखारी : भागी तो घर का कौनो आदमी पीछा क्यों नहीं किया।

सोमारु : अरे देखता तब न पीछा करता! और कौन करता? गोदी का बालक? दू बिरस का बच्चा है गोद में। मोतिया के बाप फकीर दुसाध लोथ गए हैं। दुआर पर पड़े रहते हैं। गठिया से देह अकढ़ गई है।

जगधारी : अन्हार में भागी।

भिखारी : मोती तो बाहर है। हुआ क्या था?

सोमारु : बहरवासुँ की औरत। जवान उमिर . . . जवान देह। आफ़त है। बबुआन टोला के लोग जीना दूभर कर दिए थे उसका। रात-बिरात किवाड़ ठेल के घुसने के चक्कर में रहते थे लोग। कल मौक़ा हाथ लग गया। सुने हैं कि गदाधर सिंह के बेटा घुस गए।

जगधारी : पानीदार जनाना थी। निकल गई घर से। मान-मरजाद बचाने के वेग में कूद गई गंगाजी में।

जगदेव : फ़कीर कौन नींद सोये थे भाई! हल्ला करना चाहिए था। टोला-मोहल्ला जागता।

जगधारी : कौन मुँह खोलता है टोला-महल्ला में। अब मर गई, तो समझ में आ रहा है। चलो . . . जल्दी चलो।

भिखारी : रुको बाबू, रुको। हम भी चलते हैं। मन-मिजाज काबू में रखो।

बंगाली : थाना-कचहरी का मामला बनेगा।

सोमारु : चोप! मऊगा कहीं का।

(सोमारु और जगधारी तेज़ी में निकलते हैं। पीछे-पीछे अन्य लोग जाते हैं। भिखारी सबसे पीछे थके-टूटे कदमों से जाते हैं। प्रकाश सिमटता है। अंतराल संगीत। स्त्री-स्वर में विलाप ध्वनि।

मंच पर भिखारी का घर। मनतुरनी भिखारी की प्रतीक्षा में खड़ी हैं। सामने से भिखारी प्रवेश करते हैं। थके-हारे कदमों से चल रहे हैं।)

मनतुरनी : आ गए? बहुत देर से राह देख रहे हैं।

भिखारी : मोती के दुआर पर थे। चली गई . . . ले गए लोग। बहोर लौटे?

मनतुरनी : ना। उनके यहाँ भी बहुत देरी से अरथी उठी है। पतोहू के नैहर सनेस गया, आदमी आया, तब गए हैं लोग। रात हो जाएगी लौटते-लौटते। *(भिखारी बैठ जाते हैं।)*
अब बैठो मत। उठो, हाथ-मुँह धो लो . . . कुछ खा लो। भोर से साँझ होने जा रही है। ना कुछ खाए, ना पिए। दिन-भर बिना अन्न-दाना के रह गए।

भिखारी : खा लेंगे। भूख ना है अभी।

मनतुरनी : बिना खाए तो जिनगी कटेगी नहीं।

भिखारी : हाँ, देह धरे को दंड। . . .मन बहुत बेचैन है। तिवारीजी की पतोहू को तो हम देखे ना थे, पर मोती बहू की सूरत आँख के सामने नाच रही है। एक दिन चिट्ठी बँचवाने आई थी। साँवर देह . . . धनुही की रस्सी की तरह तनी हुई देह . . .गोद में बच्चा। दाँत से आँचल का कोर दबाकर खड़ी रही . . .हम चिट्ठी बाँचकर सुनाए। लगता है कि अब आकर खड़ी हो जाएगी सामने।

मनतुरनी : एक दिन में दू गमी हो गई। पता नहीं कौन देवी-देवता का कोप है!

भिखारी : एक ओर अपने ही गाँव के लोग . . . और दूसरी और अपने ही घर का माथ-मलिक . . .

मनतुरनी : सब करम का खेल है। जनाना की जिनगी बहुत कठिन है शिलानाथ के बाबू। तुम ना थे। गाय जैसी थर-थर काँपते जिनगी के दिन कटे। हमारे घर में तो सास-ससुर, देवर-गोतिन, बेटा-बेटी सब थे। सारा घर भरा था। फिर भी, अपने आदमी के बिना जनाना की जिनगी का कौनो मोल ना होता है। . . . उठो अब। साँझ हो रही है। दिया-बाती का बखत होने वाला है।

भिखारी : हम खा नहीं पाएँगे।

मनतुरनी : ठीक है। मत खाना। हाथ-मुँह तो धो लो।

(भिखारी उठते हैं। मनतुरनी पानी देती हैं। भिखारी हाथ-मुँह धोते हैं और भीतर जाते हैं। प्रकाश सिमटता है। सुबह का प्रकाश! गंगा तट। भिखारी और बाबूलाल। नेपथ्य से कुछ पंक्तियाँ सुनाई पड़ती हैं।)

नेपथ्य स्वर : नदिया किनारे रेत पर
लोटे हिरन की प्यास रे।
नदिया किनारे रेत पर
पागल हुई ये साँस रे।
नदिया किनारे रेत पर
बैठे भिखारी दास रे।

(भिखारी दोनों घुटनों को बाँहों में बाँधकर बैठे हैं। बाबूलाल नदी के ऊपर के आकाश में उदित हो रहे सूर्य को देख रहे हैं।)

बाबूलाल : नदी किनारे भोर देखना, हमको बहुत अच्छा लगता है। जानते हो, क्यों अच्छा लगता है?

भिखारी : क्यों?

बाबूलाल : नदी के पेट से . . .जल—गरभ से निकलता है सूरज। इतना बड़ा अँजोर का गोला। आग का गोला, और जनमता है पानी के पेट से।

भिखारी : हम समझे ना।

बाबूलाल : पर हम समझ रहे हैं। भिखारी, तुम नदी हो, निरमल-शीतल जल से भरी हुई नदी, . . .पर तुम्हारे गरभ में अँजोर का गोला छिपा है। छिपा है आग का गोला। बिरहा-बहार, कलजुग प्रेम से काम ना चलेगा। हम ये नहीं कह रहे हैं कि सब खराब है, पर असल ना है। तुम तुलसी बाबा बनना चाह रहे हो। उनके पीछे-पीछे चलोगे, तो राह में छूट जाओगे मेरे भाई।

भिखारी : हम समझ नहीं पा रहे हैं कि कौन चीज़ है हमारे भीतर, जो घूम रही है . . .हिंडोर रही है। . . .हमारे भीतर कुछ है, पर क्या है, ना बूझ पाते हैं। मन कहना सब चाहता है, पर . . .

बाबूलाल : डर लगता है?

भिखारी : ना। डर ना है। जानते हैं हम कि साँच कहे तो मारन धावे। सब सहने को तैयार हैं। नाच पार्टी बना के सिर्फ पेट पोसना हमारा मकसद ना है। पेट पोसने के लिए बहुत राह है। घर-परिवार, हित-नाता सब नाच के कारन बैरी हो चला है। मानपुरवाली भीतरे-भीतर नाच के चलते बहुत दुखी है। खुल के नहीं बोलती, पर जानते हैं हम कि उसका मन कलपते रहता है। बाबू से बोलचाल बंद है। हमको देखते ही उनकी देह धधकने लगती है . . . आनी-बानी से ना घबराते हैं हम, पर जो अपना है, उसको दुखी करके कब तक चैन से जी सकेंगे? . . .हम जानते हैं कि खेला में साँच कहेंगे तो जमाने के कान में जहर माफिक लगेगा . . . साँच दिखाएँगें तो आँख में बर्छी की नोक घुस जाएगी। इसका कुफल भोगना पड़ेगा। हम तैयार हैं सब सहने को, पर कौन तरह कहें? . . .कौन तरह दिखाएँ?

बाबूलाल : हम आए हैं, तब से देख रहे हैं कि तुम गुमसुम हो? कौन पीड़ा तुमको मथ रही है?

भिखारी : जनाना की जिनगी। दू-दू औरतन की जान बिना कौनो कसूर चली गई। कौन दोख था उनका? . . .क्या अपना, क्या पराया, सबके लिए माटी का ढूह है औरत की देह। जिसका मन किया ढाह दिया। उसके मन आत्मा की कौनो आदमी फिकर ना करता है।

बाबूलाल : बस भिखारी, बस। यही तो बात है। यही है मरम। . . .इसी मरम को छानो-बान्हो। . . .इसी मरम का भेद खोलो। . . .पर तुमसे कुछ ना होगा। तुम तो रोने-बिसूरने लगते हो। बात-बात पर रोना। . . .रोना बंद करो। अपने सबद . . . अपनी बानी से मारो कि धरती फट जाए। लोग रोएँ-बिलखें, पर तुम मत रोओ, मत बिलखो। मारो ऐसा सबद बान कि लोग तड़पें . . . छटपट करें और तुम बिहँसो। बिहँस-बिहँस के तरह-तरह का रूप धरो।

भिखारी : क्या करें? मोती बहू की सूरत भुलाए ना भूल रही है। . . .कटहल के कोए जैसी आँख में काजर डारे आई थी, हमसे चिट्ठी बँचवाने। तिवारी की पतोहू भी बहुत सिधुआ थी। जैसी सुन्नर, वैसी ही सिधुआ। . . .कैसे डाली होगी माहुर अपने मुँह में? माहुर खाकर कितना तड़पी होगी! . . .उस घड़ी किसकी सूरत उसकी आँख में बसी होगी? . . . मोती बहू कैसे कूदी होगी गंगा के पेट में? कितना हाथ-पाँव मारी होगी किनारा पाने के लिए? इस नदी का जो जल पीते मन ना अघाता है, उसी जल से कितना दुख हुआ होगा उसको?

बाबूलाल : भिखारी! सम्हालो अपने को।

(भिखारी बिलख उठते हैं। बाबूलाल उन्हें सभालते हैं। भिखारी धीरे-धीरे सामान्य होते हैं। प्रकाश सिमटता है। मंच का दूसरा भाग दीप्त होता है। एक छोटे प्रकाशवृत्त में बैठे भिखारी लिख रहे हैं। लिखकर गाते हैं।)

भिखारी : डगरिया जोहत ना, बीतत बारे आठ पहरिया हो,
डगरिया जोहत ना।

(मंच पर दूसरा प्रकाशवृत्त उभरता है। मोती बहू गा रही है। भिखारी की आवाज़ पर उसकी आवाज़ सुपरइम्पोज होती है।)

मोती बहू : धोती पढ़धरिया धर के कान्हवा पर चदरिया हो,
बबरिया झारि के ना, होखब कवना सहरिया हो,
बबरिया झारि के ना।

भिखारी : कहत भिखारी मनवा करेला हर घरिया हो

मोती बहू : उमरिया भरिया ना देखत रहतीं भर नजरिया हो,
उमरिया भरिया ना।

(मोती बहू रोती है। उसके ऊपर से प्रकाश सिमटता है। भिखारी पूर्ववत् लिख रहे हैं। गायन आरम्भ करते हैं।)

भिखारी : काइ कइलीं चूकवा कि छोड़लऽ मुलुकवा तूँ,
कहलऽ ना दिलवा के हलिया बलमुआ।

(दूसरे प्रकाशवृत्त में तिवारी बहू बैठी है। वह गाती है।)

तिवारी : साँवली सुरतिया सालत बाटे छतिया में
एको नाहीं पतिया भेजवलऽ बलमुआ।
घर में अकेले बानी, इसवर जी राखऽ पानी
चढ़ल जवानी माटी मिलऽता बलमुआ।

(तिवारी बहू पर प्रकाश धीमा होता है। वह रो रही है। भिखारी अपने प्रकाशवृत्त से बाहर निकलते हैं। इस बीच मोती बहू का स्थल भी दीप्त होता है। दोनों समवेत् स्वर में गाती हैं। सामने से आती हुई कमला दिखती हैं।)

मोती बहू, तिवारी बहू : पिया मोर गइलन परदेस, ए बटोही भइया।
रात नाहीं नींद दिन तनी न चयनवा, ए बटोही भइया।
सहतानी बहुते कलेस, ए बटोही भइया।

(दोनों पर से प्रकाश सिमटता है। भिखारी के सामने कमला हैं। उनके इर्द-गिर्द एक स्वप्निल प्रकाश है।)

कमला : रोवत-रोवत हम भइलीं पगलिनियाँ, ए बटोही भइया,
पिया मोर गइलन परदेस, ए बटोही भइया।

भिखारी : बबुनी! . . . कमला बबुनी आप?

कमला : क्यों? हमारा दुख इसमें शामिल ना करोगे क्या?

भिखारी : बबुनी, दुख तो दुख होता है। क्या हमारा, क्या तुम्हारा! सब तो आप ही का है।

कमला : बहुत भेद होता है दुख और दुख में।

भिखारी : हाँ बबुनी, ठीक कहती हैं आप। मानपुरवाली भी यही कहती है कि बहुत भेद होता

है दुख और दुख में।

कमला : बहुत बेचैन रहते हो आजकल?

भिखारी : क्या करें? कभी-कभी तो कुछ नहीं सूझता! आप तो हरदम आँख के सामने रहती हैं। जब कुछ सोचते हैं, लिखते हैं . . . आ के ठाड़ हो जाती हैं। आपका ऐसा भेस . . . बहुत पीड़ा देता है। रात में नींद से चिहुँक-चिहुँक कर जागते हैं। हवा-बयार . . .आकाश-पाताल . . .सब एक साथ बोलने लगते हैं। सब पूछते हैं तरह-तरह के सवाल। एक दिन में दू-दू औरतन की जान चल गई। मोती बहू पगली बयार की तरह उमड़ती-घुमड़तो रहती है हमारे भीतर . . .गंगाजी के पेट से आन्ही-बतास बनकर उठती है और छाप लेती है हमको। तिवारी बहू आके हमारे सिरहाने खड़ी हो जाती हैं। रात-बिरात, दिन-दुपहरिया हर घड़ी आके पूछती हैं कि कौन करेगा हमारी रच्छा? एक आदमी हो तो हम लाठी लेकर रोक लें? मोती बहू पूछती है कि हमारा कौन दोख? अब एक आदमी का दोख हो तो हम कहें! . . .का कहें हम बबुनी? का करें हम? सोचे, गान्ही बाबा का रास्ता अपनाएँ! . . . कुछ तो चैन मिलेगा आत्मा को। एक रात, बिना किसी को बताए, चुप—चोरी मोटरी गठरी बाँध के चले भी, पर छाड़न किनारे से लौट आए। पीछे-पीछे आपको देखा . . . आप बुला रही थीं . . . मोती बहू . . . घूघ ताने तिवारी बहू, सब हमारे पीछे-पीछे। आप तो चुपचाप खड़ा रहीं, पर मोती बहू सामने आकर तन गई . . . मत जाओ! तिवारी बहू का रोना कलेजे में छेद करने लगा। लौट आए कमला बबुनी . . .। एक तरफ एक भारत माता . . . और हमारे सामने . . .।

कमला : तुम अपनी भारत माता को देखो भिखारी . . .

भिखारी : हाँ, सो तो है।

कमला : खेला तैयार हो गया?

भिखारी : लगे हैं, बबुनी . . .भूख-पियास सब हर लिया है इस खेला ने . . . जुलुम की रात थी बबुनी, जिस रात दूनो मरी। गजब भयावन रात थी। उस रात के बाद ना तो हमारे लिए चनरमा उदित हुए—ना कवनो तारा। उसके बाद से ना सोए हम, ना जागे। आँख से चुनते रहे हैं सबद-सबद। चले थे तुलसी बाबा बनने और बन गए कबीर दास-सेज हमारी सिंह भई है, जब सोऊँ तब खाए!

कमला : सुने हैं कि बहुत बढ़िया नाचते हो . . . औरत का रूप धर के . . .।

भिखारी : बबुनी! रूप ना धरेंगे तो लीला कैसे होगी। रूप धरेंगे तभी तो दूसरे को बताएँगे . . .

कमला : रूप धरते लाज आती होगी?

भिखारी : लाज कैसी, अब कौन लाज? रूप धरना कौनो पाप ना है, पर कोई बूझने को तैयार नहीं है। ना मानपुरवाली, ना ही बाबू। मानपुरवाली को लाख समझाते हैं, पर. . .। बाबू तो बोलचाल बंद कर दिए हैं। बात-बात पर परान तेयागने लगते हैं। . . .हम समझते हैं। दूनो को सुनना पड़ता है। पर हम क्या करें? अब हमारे वश में ना है कि . . .

कमला : आमडाढ़ीवाली होती, तो अपने हाथ से सिंगार-पटार करके, तुम्हारे लिलाट पर टिकुली साट कर भेज देती। बहुत साहस था उसके पास। धीरे-धीरे मानपुरवाली भी समझ जाएगी।

भिखारी : *(फीकी हँसी हँसते हैं)* आप भी बबुनी! . . .

(प्रकाश सिमटता है। कमला अदृश्य हो जाती हैं। भिखारी विस्मित हैं। कागज के पन्ने सहेजते हैं। पूरा प्रकाश सिमट जाता है। तीव्र नृत्य-लय वाले संगीत के साथ प्रकाश फैलता है। एक पुरुष नर्तक नाच रहा है। नाचदल के लोग बैठे हैं। पूर्वाभ्यास चल रहा है। बाबूलाल हारमोनियम बजा रहे हैं। भिखारी सूत्रधार की मुद्रा में खड़े हैं।)

भिखारी : नावत बानी सब कर माथा
चित देइ सुनहु बिदेसिया गाथा।

बाबूलाल : प्यारी सुन्दरी का कह के रोवत बाड़ी?

छबिला : मलिक जी! हम एक बात बोलें?

भिखारी : बोलो बाबू, बोलो।

बुधन : मत बोलो। तुम्हारे पेट में कुछ ना पचता है जी?

जगदेव : बिलाई के पेट में मलाई ना पचता है।

(सब हँसते हैं।)

छबिला : हम बिलाई हैं?

जगदेव : खाली बिलाई ना, घर घुसनी बिलाई।

(फिर हँसते हैं लोग)

भिखारी : बात तो बोलो बाबू।

छबिला : बुधन बहुत बढ़िया गीत खोज के लाया है। ज़रा सुन लिया जाए। अगर खेला में डाल दिया जाए तो ख़ून गरमा देगा।

भिखारी : सुनाओ जी बुधन!

बुधन : ना मलिक जी।

जगदेव : सोनपुर मेला वाला गीत हमको याद नहीं है? मलिकजी के सामने गाने में लाज लगती है? ससुर-भसुर हैं क्या मलिक जी?

बुधन : सोनपुर मेला में सुराजी लोग गा रहे थे। सुराज वाला गीत है। तो सुनिए

जिन जालिम जुल्मी लोगों ने
तुम पर है अतियाचार किया,
वे थोड़े से फिरंगी
लंदन को जाने वाले हैं।

जगदेव : बस?

बुधन : ना जी और है। अब मलिकजी कहें तब न?

बाबूलाल : मलिकजी, बुधन महतो जेहल का नेवता लेकर आए हैं सोनपुर से।

भिखारी : बुधन का गीत तो बहुत बढ़िया है। . . .पर जगदेव, हमको-तुमको—सबको बहुत बात सोचकर, आगा-पीछा देखकर चलना है मेरे भाई। सब काम, सबको नहीं करना है। गान्ही बाबा किसी को नहीं रोकते, पर कहते हैं कि जो आदमी जहाँ है, वहीं से . . . जो कर सकता है, वही करके भारत माता को गुलामी से छुड़ाए . . . भाई रे, हम लोग ग़रीब-गुरबा हैं . . . छोटे जात के हैं . . . हाथ-पाँव में एक ना कई-कई बेड़ी-हथकड़ी लगी है। धरती की गुलामी ख़तम हो जाए और आदमी गुलाम रहे तो कौन लाभ?

जगदेव : मतलब?

भिखारी : मेला में कितना हल्ला होता है? होता है न? पर मेला से बाहर निकल जाओ, तो

थोड़ी दूर बाद कौनो आवाज़ ना सुनाई पड़ती है।

छबिला : हाँ, सो तो है।

भिखारी : पर अधरतिया में . . . जब सब कोई नींद में रहता है . . . कौनो औरत विलाप करती है, तो पाँच-दस गाँव के लोग सुनते हैं—कोस, दू कोस, चार कोस तक आवाज़ जाती है . . . दिन में भी गंगाजी बहती हैं, पर लहर की आवाज़ गाँव तक ना पहुँचती है, पर रात में . . . हहर-हहर करती गंगाजी को रोज सुनते हो कि नहीं? . . .दिन में रेलगाड़ी की सीटी नहीं पहुँचती कुतुबपुर . . . पर रात में . . . गोल्डिनगंज में चिचियाती है—फेंकरती है रेलगाड़ी, तो कुतुबपुर में करेजा फोड़ देती है। . . .देखो भाई . . . हमारी-तुम्हारी आवाज़ . . . अधरतिया की आवाज़ है . . . अन्हार में रोती कलपती . . . छाती पर मुक्का मार के विलाप करती जनाना की आवाज़ . . .।

बाबूलाल : समझे-बूझे जी बुधन?

छबिला : इसका समझदानी फूट गया है। सब बह जाता है।

बुधन : हर घड़ी हँसी-ठट्‌ठा मत करो।

भिखारी : हम जेहल से, लाठी से ना डरते हैं, पर नहीं चाहते कि . . . सउरी में . . . जनमते ही बालक मर जाए।

जगदेव : छोड़िए मलिक जी, आगे बढ़िए। चलो जी सोमारु, पावटी काटो।

सोमारु : *(स्त्री वेश में गाते हुए नृत्य करता है।)*

हाय सँइयाँ कइ देलऽ सून खटोला।
आम के डाली कोयलिया कुहुके।।

भिखारी : ऐसे ना बाबू! ढेर मत कूदो। धीरज से। पाँव बाँधकर चलो। नजाकत से बाबू।

(स्वयं नाच-गा कर दिखाते हैं)

आम के डाली कोयलिया कुहुके
ओसहीं कुहुकत बा चोला

सोमारु : कहत भिखारी मयावन लागत बा
हमरा कुतुबपुर के टोला
सँइयाँ कई देल सून खटोला . . .

(सामूहिक विलाप स्वर सुनाई पड़ता है। सब चकित होते हैं। पूर्वाभ्यास रुक जाता है।)

भिखारी : ए जी मुखलाल, पता करो बाबू। क्या बात है?

जूठन : *(प्रवेश करते हुए)* मनबोध सिंह के पाहुन गुज़र गए।

सोमारु : कौन जी? पिछले बरस तो बियाह किए थे।

जगदेव : हूँ। चानी गाँव में हुआ था। कुल्हड़िया के पास, आरा ज़िला।

जगदेव : बहुत मातबर थे। जगह-जमीन, रुपिया-पइसा-सब था . . .।

बुधन : बूढ़ थे मरदे! एकदम झुलुवा झूल रहे थे।

जगदेव : ठोक के रुपिया दिया था। मँगनी में थोड़े ले गया था। मनबोधवा सार पइसा का जनमा हुआ है।

बुधन : हुँह! बड़का बनता है! बेटी बेचवा!

बाबूलाल : अब आगे मलिक जी?

भिखारी : *(बुदबुदाते हैं)* बेटी बेचवा . . .बेटा बेचवा . . . अब आज बंद कर दो बाबूलाल भाई।

(जैसे खो गए हों) बेटी बेचवा . . .

(नेपथ्य से गीत ध्वनि गूँजती है।)

नेपथ्य स्वर : गिरिजा कुमार! करऽ दुखवा हमार पार
ढर-ढर-ढरकत बा लोर मोर हो बाबूजी।
रूपिया गिनाई लिहलऽ, पगहा धराइ दिहलऽ
चेरिया के छेरिया बनवलऽ हो बाबूजी।
अइसन देखवलऽदुख, सपना भइल सुख
सोनवा में डललऽ, सोहागावा हो बाबूजी।

(मंच के एक कोने में प्रकाश। एक रोती हुई औरत को घसीटते हुए दो-तीन लोग लाते हैं। औरत रो रही है और प्रतिरोध कर रही है।)

औरत (बुचिया) : ना . . . हम माथ ना छिलवाएँगें। . . .हम केश ना कटवाएँगें। कैसे निहारेंगें हम अपनी सूरत दरपन में? . . .ना बाबूजी . . . हमको छोड़ दीजिए . . . हमको छोड़ दो भइया . . . हम परान दे देंगे . . .

पिता : माथा तो छिलवाना पड़ेगा बुचिया! . . . यही जग की रीत है। . . .क्या करोगी अब दरपन में अपना चेहरा निहार के?

औरत : हम जान दे देंगे, पर अपने माथ का केश ना देंगे . . .।

भाई : चोप्प! बैठो चुपचाप। चिल्ला-चिल्लाकर सारा गाँव-जवार मत जुटाओ। करम फूट गया, तो माथा का सिंगार रखकर क्या करोगी? बैठो . . . हजाम बाहर बैठा है। चुपचाप केश छिलवा लेना।

(पिता-भाई दोनों निकल जाते हैं। औरत बैठी रोती रहती है। उसके सामने एक-दूसरे मद्धिम प्रकाशवृत्त में भिखारी सोये हैं। औरत आगे बढ़कर उनके पास आती है।)

औरत : भिखारी भइया! ए भिखारी भइया . . . उठो भइया!

(भिखारी उठते हैं, पर जैसे आधी नींद में हों और स्वप्न देख रहे हों।)

भिखारी : का हो बुचिया? क्या है?

औरत : उठो भइया, उठो। माथा का केश काट दो। सब केश उतार दो भइया।

भिखारी : क्यों ए बुचिया? कौने कारन माथ छिलवा रही हो?

औरत : हमारे स्वामीजी गुजर गए न भइया।

भिखारी : ना बुचिया ना . . . हमसे नहीं होगा। हम ना काटेंगे तुम्हारा बाल।

औरत : पाँव तुम रँगे . . . तो माथ का केश कौन उतारेगा?

भिखारी : जौन हाथ से पाँव रँगे, वहीं हाथ से कैसे उतारें माथ का केश?

औरत : उतारना तो पड़ेगा भइया। बाबूजी कहते हैं, यही जग की रीत है।

भिखारी : ना बुचिया! ना। हमसे ना होगा। हमारा कलेजा फट जाएगा ए बुचिया। . . .हमारे पास हाथ कहाँ हैं कि तुम्हारा केश उतारें? देखो, देखो, कहाँ है हाथ? ना है हाथ। लूल हैं हम।

(लड़की पर से प्रकाश सिमटता है। उसकी जगह नाट्य-दल का अभिनेता है। विभ्रम रचता हुआ यह दृश्य नाटक के दृश्य में बदल जाता है। भिखारी अपना संवाद दुहराते हैं।)

भिखारी : हमारे पास हाथ कहाँ है कि तुम्हारा केश काटें। ना बुचिया . . . ना।

(विभिन्न दिशाओं से 'ए बंद करो नाच-तमाशा, . . .खेल तमाशा कर रहा है कि पगड़ी उछाल

रहा है? . . . साला सब इज्जत उतार रहा है। . . बंद करो। . . . मारो सालों को। . . . मार रे' की ध्वनि गूँजने लगती है। भिखारी ठाकुर पहले अपने ऊपर गिरते ईंट-पत्थरों से अपना बचाव करते हैं। कई लोग मंच पर उन्हें लाठी लेकर घेर लेते हैं। उनके पीछे उनके दल के अन्य लोग दुबके हुए दिखते हैं।)

पुरुष (एक): : खेला नहीं होगा अब।

पुरुष (दो) : यही खेला है?

पुरुष (तीन) : मार के सारे ढोलक फोड़ देंगे।

पुरुष (एक) : रे, हरमुनिया छीन। छीन तो हरमुनिया।

पुरुष (दो) : भागो ढोलक-हरमुनिया लेकर। और सुन लो . . . सट्टा-बयाना का एक पैसा नही मिलेगा। चलो . . . रेलगाड़ी हो जाओ।

(सब फ्रिज हो जाते हैं। कमला प्रवेश करती हैं।)

कमला : भिखारी! ए भिखारी!

(भिखारी फ्रिज की स्थिति से बाहर निकलते हैं। शेष लोग यथावत् हैं।)

भिखारी : का है बबुनी? का बात है?

कमला : हमारा गोड़ नहीं रँग दोगे भिखारी?

भिखारी : रँगेंगे बबुनी . . . रँगेंगे, पर रंग से ना। सबस से रँगेंगे . . . गीत से रँगेंगे . . . नाच से रँगेंगे . . . जैसी हर औरत का गोड़ रँगेंगे अपने खेला से।

(भिखारी आगे बढ़ते हैं।)

कायापुर घर हउए, पानी से बनावल गउए
अचरज अकथ हऽ नाम हो बिदेसिया
नाच ऽ वा के बोलिया से गोलिया लागत बाटे
अबहूँ से चेत ऽ मोर एतने अरजिया
नाहिं अब डर कवनो नाहिं अब मोहिया
देस-देस घूमबि बनि के बटोहिया

नेपथ्य स्वर : ना कमल, ना कुमुदिनी
ना पोखर जल पात
खेल-तमाशा करम-धरम है
कविताई दिन रात
नाम भिखारी, गाँव कुतुबपुर
नाई हमारी जात।

हृषीकेश सुलभ : सुपरिचित कथा एवं नाट्य लेखक, रंगमंच पर नियमित लेखन। तीन कथा संकलन के साथ *अमली, माटी गाड़ी* एवं *मैला आँचल* नाटक प्रकाशित। भिखारी ठाकुर के रचनात्मक जीवन पर केन्द्रित *बटोही* आपका नया नाटक है। आकाशवाणी पटना में कार्यरत हैं।